A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 21 अगस्त, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 335, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सांची : जीवन की ओर...

फोटो: मणिमोहन

सुप्रभात

मैं चला
न भूमि ने दिशा दी
न आकाश ने संकेत
बस अन्तर्आत्मा ने कहा,
÷तू खोज में है÷।

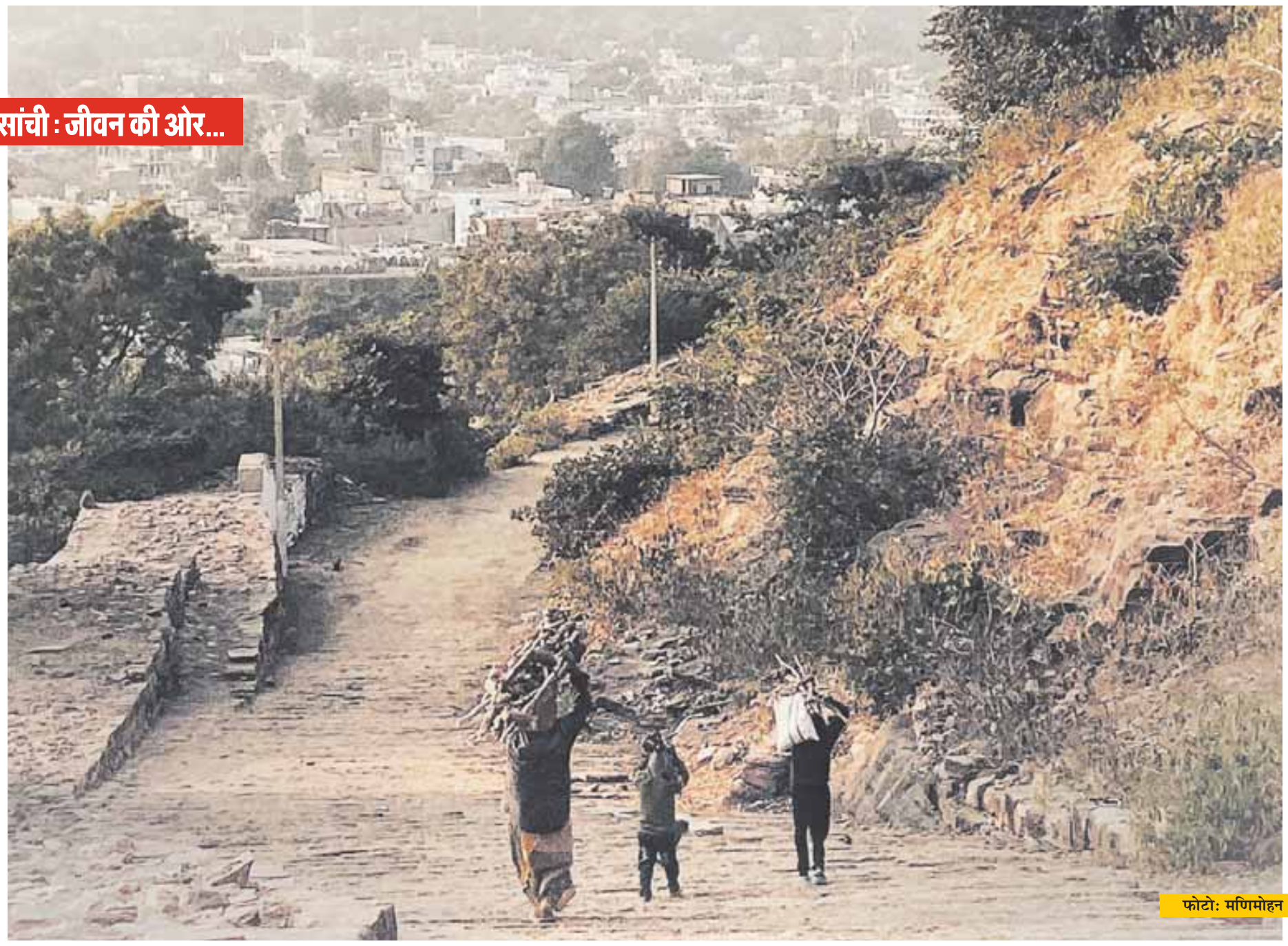

न पथ स्थिर था
न गति और न लक्ष्य की निश्चित रेखा
फिर भी मैं चलता रहा
जैसे चलना मानो
जीवन की अनिवार्य शर्त हो

मैंने फूलों से पूछा-
क्या जीवन तुम्हारा सौंदर्य है?
मैंने पेड़ों से पूछा-
क्या जीवन तुम्हारी स्थिरता है?
मैंने नदियों से पूछा-
क्या जीवन तुम्हारी गति है?
मैंने रास्तों से पूछा-
क्या चलते रहना तुम्हारी नियति है?

और सबने मुस्कुराकर
मौन को ओढ़ लिया
और तब मैंने जाना
जीवन एक खोज है-
स्वयं की।

- जीवन एस. रजक

दूसरे देशों पर निर्भरता

हमारी सबसे बड़ी दुश्मन

● पीएम मोदी बोले-यह आत्मसम्मान को चोट पहुंचाता है ● पीएम ने कहा-आत्मनिर्भरता से ही निकल सकता है हल

भावनगर (एजेंसी)। गुजरात के भावनगर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 'समुद्र से समृद्धि' कार्यक्रम में शामिल हुए। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने आत्मनिर्भर भारत पर खास जोर दिया। इस दौरान उन्होंने ये भी बताया कि भारत का असली दुश्मन कौन है। इसी के साथ उन्होंने मिलकर इस दुश्मन को हराने की बात भी कही। पीएम मोदी ने कहा, भारत आज विश्वबंधु की भावना से आगे बढ़ रहा है। दुनिया में हमारा कोई बड़ा दुश्मन नहीं है। उन्होंने आगे कहा, सच्चे अर्थ में अगर हमारा कोई दुश्मन है तो वो है दूसरे देशों पर हमारी निर्भरता। यही हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है और हमें मिलकर भारत के इस दुश्मन को हराना ही होगा। पीएम मोदी ने कहा, जितनी ज्यादा विदेशी निर्भरता का मतलब है उतनी ज्यादा देश की विफलता।

100 साल पर विकसित भारत का सपना

भारत को अगर 2047 तक विकसित होना है तो भारत को आत्मनिर्भर होना पड़ेगा। आत्मनिर्भर होने के अलावा हमारे पास कोई विकल्प नहीं है। 140 करोड़ देशवासियों का एक संकल्प लेना चाहिए कि चिप हो या शिप हमें भारत में ही बनानी है। अब बिजनेस और कारोबार को और सरल करना है। मानसून सेशन के दौरान संसद में हमने कई पुराने कानूनों को बदला है जो अंग्रेजों के जमाने से चले आ रहे हैं। मैरीटाइम सेक्टर में रिफॉर्म किया है। इन कानूनों के आने से

कांग्रेस ने भारत के हर सामर्थ्य को नजरअंदाज किया

प्रधानमंत्री मोदी ने आगे कहा, भारत में सामर्थ्य की कोई कमी नहीं है, लेकिन आजादी के बाद कांग्रेस ने भारत के हर सामर्थ्य को नजरअंदाज किया, इसलिए आजादी के 6-7 दशकों बाद भी भारत वो सफलता हासिल नहीं कर पाया, जिसके हम हकदार थे। इसके दो बड़े कारण रहे- लंबे समय तक कांग्रेस सरकार ने देश को लाइसेंस कोटा राज में उलझाए रखा। दुनिया के बाजार से अलग-थलग रखा। कांग्रेस सरकार की नीतियों ने देश के नौजवानों का बहुत नुकसान किया। पीएम मोदी ने जोर देते हुए कहा कि अगर 2047 तक हमें विकसित होना है तो भारत को आत्मनिर्भर होना ही होगा। इसके अलावा कोई विकल्प नहीं है।

सऊदी अरब को परमाणु हथियार देगा पाकिस्तान

● रक्षा मंत्री बोले-भारत से जंग हुई तो सऊदी साथ देगा

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने गुरुवार को कहा कि पाकिस्तान अपने न्यूक्लियर हथियार सऊदी अरब के साथ शेयर करेगा। दोनों देशों के बीच बुधवार को एक रक्षा समझौता हुआ था, जिसके तहत अगर किसी एक देश पर हमला होता है, तो इसे दोनों पर हमला माना जाएगा। आसिफ ने पाकिस्तानी न्यूज जियो टीवी को दिए साक्षात्कार में कहा, हमारी परमाणु क्षमता पहले से अच्छी है। यह समझौता दोनों देशों को एक-दूसरे की रक्षा करने का वादा करता है।

दूध उत्पादन में मध्यप्रदेश को बनायेंगे अग्रणी : मुख्यमंत्री

विकास के कामों के लिए धन की कमी नहीं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश में विकास की रफ्तार किसी भी हाल में थमेगी नहीं। सरकार के पास विकास कार्यों के लिए धन की कोई कमी नहीं है। उन्होंने कहा कि दुग्ध उत्पादन में अभी मध्यप्रदेश तीसरे स्थान पर है। हम दूध उत्पादन में मध्यप्रदेश को देश में पहले स्थान पर लाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। डॉ. आंबेडकर कामधेनु योजना के अंतर्गत पशुपालकों को विशेष प्रोत्साहन दिया जा रहा है। इसके तहत 25 से अधिक गाय पालने वाले गोपालकों को 10 लाख रूपये तक का अनुदान दिया जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के शनिवार को अशोकनगर के ग्राम रूसल्ला आगमन पर ग्रामीणों ने जगह जगह आत्मीय अभिनंदन किया तथा स्मृति चिन्ह भेंट किए।अशोकनगर के रूसल्ला स्व.श्री रघुवीर सिंह यादव की पुण्यतिथि पर उनकी मूर्ति का अनावरण किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को अशोकनगर जिले के मुंगावली विधानसभा के ग्राम रसुल्ला में सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में ग्राम रसुल्ला के समाजसेवी स्व. श्री रघुवीर सिंह यादव की स्मृति में आयोजित किया गया था। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पशुपालकों से अपील की कि वे अधिक से अधिक संख्या में गाय पालन करें और दूध, दही, मक्खन सहित अन्य दुग्ध उत्पादों के उत्पादन में बढ़ोत्तरी कर सरकार की अनुदान योजनाओं का लाभ उठाएं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों एवं परम्पराओं को बढ़ावा दिया जा रहा है। दशहरे पर शस्त्रपूजन पूरे प्रदेश के शस्त्रागारों में किया जाएगा। इसी तरह दीपावली में गोवर्धन पूजा भी की जायेगी।

मुख्यमंत्री ने की अनेक घोषणाएं

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ग्राम रसुल्ला के हाईस्कूल को हायर सेकेंडरी स्कूल में प्रोन्नत करने की घोषणा की। साथ ही उन्होंने खेल मैदान एवं खेल परिसर के निर्माण की भी घोषणा की। स्थानीय जनप्रतिनिधियों की मांग पर मुख्यमंत्री ने ग्राम रसुल्ला से लगे गांवों में लगभग 100 हेक्टेयर की सिंचाई परियोजना का सर्वेक्षण करने के निर्देश कलेक्टर को दिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश की हर सिंचाई योजना पर सरकार गंभीरता से काम कर रही है और प्रदेश का कोना-कोना सिंचित होगा।

राहवीर योजना बनेगी मददगार

मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने कहा कि राहवीर योजना के तहत अगर किसी का एक्सीडेंट हो जाता है और यदि कोई व्यक्ति उन्हें समय से अस्पताल पहुंचाकर जान बचाते हैं तो व्यक्ति को 25 हजार रुपये की राशि योजना के अंतर्गत उपलब्ध कराई जायेगी। इस योजना का उद्देश्य आम लोगों को बिना किसी डर के इमरजेंसी में सड़क दुर्घटना में घायलों की मदद करने के लिए प्रेरित करना है।

प्रदर्शनी का अवलोकन

कार्यक्रम स्थल पर मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव द्वारा विभिन्न विभागों द्वारा सेवा पखवाडा अभियान अंतर्गत लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन किया गया। पूर्व सांसद डॉ. के.पी. यादव, मुंगावली विधायक श्री बृजेन्द्र सिंह यादव ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया।

सीआईडी करेगी जुबीन गर्ग की मौत की जांच

● परिवारजनों से मिले असम सीएम,दिए जांच के आदेश

सिंगापुर में स्कूबा डाइबिंग के दौरान हुई थी गर्ग की मौत

गुवाहाटी (एजेंसी)। लोकप्रिय गायक जुबीन गर्ग की सिंगापुर में स्कूबा डाइविंग के दौरान मौत हो गई थी। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा अपनी पत्नी के साथ जुबीन के घर पहुंचे और परिवार से मुलाकात की। हिमंत बिस्व सरमा ने बताया कि वह सिंगापुर से लगातार संपर्क में हैं। जुबीन गर्ग का पोस्टमॉर्टम सिंगापुर में पूरा हो गया है। उनके पार्थिव शरीर को अब भारतीय दूतावास के अधिकारियों को दे दिया गया है। वहीं असम में दो लोगों के खिलाफ कई एफआईआर दर्ज की गई हैं। सीएम ने बताया कि शेखर जोथी गोस्वामी,संदीपन गर्ग और सिद्धार्थ शर्मा (प्रबंधक) जुबीन गर्ग के शव को भारत ला रहे हैं। सीएम ने बताया कि उन्होंने अपनी पत्नी रिनिकी भुयान सरमा के साथ परिवार से मुलाकात की।

बांग्लादेश से पाकिस्तान तक गूंजते हैं मैया के जयकारे

● कहीं गिरा सिर तो कहीं गिरी जांघ,अद्भुत हैं यहां की जगह ● सिंगापुर, कनाडा, लंदन और श्रीलंका में भी जय जयकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। शारदीय नवरात्रि 22 से 30 सितंबर 2025 तक मनाई जाएगी। भारत ही नहीं, विदेशों में भी मां दुर्गा के कई प्रसिद्ध मंदिर हैं। सिंगापुर का श्री मरिअम्मन मंदिर, कनाडा का देवी मंदिर, लंदन का श्री दुर्गा मंदिर, श्रीलंका का नल्लूर कंदस्वामी मंदिर और नेपाल का गोरखनाथी मंदिर नवरात्रि पर विशेष पूजा और उत्सव के लिए जाने जाते हैं। भारत में तो जगह-जगह मां दुर्गा की आराधना होती ही है, लेकिन विदेशों में भी कई भव्य मंदिर मौजूद हैं जहां भक्त माता के दर्शन कर सकते हैं।

- **मनसा शक्तिपीठ तिब्बत,मिथिला पीठ नेपाल-** मनसा शक्तिपीठ तिब्बत में मानसरोवर नदी के पास है। मान्यता है कि यहां माता सती की दाईं हथेली गिरी थी। इस स्थान पर माता दाक्षायनी के रूप में पूजी जाती हैं और उनका स्वरूप एक शिला के रूप में विराजमान है। मिथिला शक्तिपीठ नेपाल की सीमा पर स्थित है। कहा जाता है कि यहां माता का बायां कंधा गिरा था। यहां माता उम के रूप में पूजी जाती हैं। नेपाल में इसके अलावा तीन और शक्तिपीठ प्रसिद्ध हैं। गुहेश्वरी शक्तिपीठ काठमांडू में बागमती नदी के किनारे, पशुपतिनाथ मंदिर के पास स्थित है। मान्यता है कि यहां माता सती के घुटने गिरे थे।
- **चट्टल भवानी और सुगंधा शक्तिपीठ बांग्लादेश-** बांग्लादेश में मां दुर्गा के कई प्राचीन और पवित्र मंदिर स्थित हैं। इन्हीं में से एक है चट्टल भवानी शक्तिपीठ, जो चिट्टागौंग जिले के चंद्रनाथ पर्वत पर स्थित है। पौराणिक मान्यता के अनुसार, यहीं माता सती की दायीं भुजा गिरी थी, जिसके कारण यह स्थान शक्तिपीठ के रूप में विख्यात हुआ। बांग्लादेश के शिकारपुर से लगभग 20 किलोमीटर दूर स्थित यह शक्तिपीठ बेहद प्रसिद्ध है। इसे सुगंधा शक्तिपीठ है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 21 अगस्त 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

भिखारी पति को दूसरा-तीसरा निकाह करने का हक नहीं

● केरल हाईकोर्ट का बड़ा फैसला,कुरान का भी किया जिक्र

कोच्चि (एजेंसी)। केरल हाई कोर्ट ने एक महत्वपूर्ण टिप्पणी में कहा है कि यदि कोई मुस्लिम पुरुष अपनी पत्नियों का भरण-पोषण करने में आर्थिक रूप से सक्षम नहीं है और उसकी पत्नी अदालत में गुजारा भत्ता मांगने के लिए पहुंचती है, तो ऐसी स्थिति में उस पुरुष के एक से अधिक विवाह को स्वीकार नहीं किया जा सकता। यह टिप्पणी जस्टिस पीवी कुन्हीकृष्णन ने एक 39 वर्षीय महिला की याचिका पर सुनवाई के दौरान की। महिला पेरिंथलमन्ना की रहने वाली है और अपने पति से 10,000 रुपये मासिक गुजारा भत्ता मांग रही थी। महिला का 46 वर्षीय पति पलक्कड़ के कुम्बदी का निवासी है और भीख मांगकर अपना गुजारा करता है। इससे पहले, याचिकाकर्ता ने फैमिली कोर्ट में गुजारा भत्ता की मांग की थी, लेकिन कोर्ट ने यह कहते हुए याचिका खारिज कर दी थी कि एक भिखारी को गुजारा भत्ता देने का आदेश नहीं दिया जा सकता।

अदालत ने कहा-शिक्षा और जागरुकता की आवश्यकता

अदालत ने कहा कि मुस्लिम समुदाय में इस तरह के विवाह शिक्षा की कमी और प्रथागत कानून के बारे में अज्ञानता के कारण होते हैं। अदालत ने धार्मिक नेताओं और समाज से अपील की कि वे इस समुदाय को शिक्षित करें ताकि बहुपत्नीत्व की प्रथा पर अंकुश लगाया जा सके। अदालत ने याचिकाकर्ता के पति की स्थिति पर टिप्पणी करते हुए कहा कि भीख मांगना आजीविका का साधन नहीं माना जा सकता। यह राज्य, समाज और न्यायपालिका का कर्तव्य है कि कोई भी व्यक्ति भीख मांगने के लिए मजबूर न हो। अदालत ने जोर देकर कहा कि राज्य को ऐसे व्यक्तियों को भोजन और कपड़े उपलब्ध कराने चाहिए।

मुस्लिम प्रथागत कानून पर भी टिप्पणी

जस्टिस कुन्हीकृष्णन ने कहा कि भले ही याचिकाकर्ता का पति मुस्लिम समुदाय से है और वह धार्मिक कानून का लाभ उठाकर एक से अधिक विवाह करने का दावा करता है, लेकिन ऐसा व्यक्ति जो अपनी दूसरी या तीसरी पत्नी का भरण-पोषण करने में सक्षम नहीं है, उसे दोबारा विवाह करने की अनुमति नहीं दी जा सकती। अदालत ने कहा, ऐसे व्यक्ति का एक के बाद एक विवाह करना, जबकि वह केवल एक भिखारी है, यह मुस्लिम प्रथागत कानून के तहत भी स्वीकार्य नहीं है।

घाटी में सुरक्षाबलों आतंकियों में मुठभेड़

एक जवान शहीद

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के उधमपुर में शुक्रवार को आतंकियों के साथ मुठभेड़ में घायल हुआ जवान शनिवार सुबह शहीद हो गया। वहीं एसपीओ समेत दो पुलिसकर्मी घायल हुए हैं। मुठभेड़ दूदू-बसंतगढ़ और डोडा के भद्रवाह में सोजधार के जंगलों में हो रही है। शुक्रवार रात करीब 8 बजे सेना की व्हाइट नाइट कॉर्प्स, जम्मू-कश्मीर पुलिस की स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप की संयुक्त टीम ने इलाके में सर्च ऑपरेशन चलाया। इस दौरान वहां छिपे जैश के 2-3 आतंकियों ने सुरक्षाबलों पर फायरिंग कर दी। मुठभेड़ वाले इलाके में रातभर कड़ी घेराबंदी कर शनिवार सुबह फिर से सर्च ऑपरेशन शुरू किया गया।

विकसित भारत में ज्यूडिशियल सिस्टम बड़ी बाधा

● पीएम के एडवाइजर बोले-कोर्ट में महीनों तक छुट्टी गलत ● कहा-माई लॉर्ड शब्द अंग्रेजों ने दिया, इसे बदलना चाहिए

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री की इकोनॉमिक एडवाइजर काउंसिल के सदस्य संजीव सान्याल ने शनिवार को कहा कि विकसित भारत के लिए हमारा ज्यूडिशियल सिस्टम सबसे बड़ी बाधा है। कई

कानून ऐसे हैं जो समस्या को आसान की बजाय जटिल बना देते हैं। कोर्ट में माई लॉर्ड जैसे शब्दों से भी आपत्ति है, जो अंग्रेजों के जमाने के हैं। इन्हें बदलना चाहिए। इसके साथ ही सान्याल ने अदालतों में महीनों तक छुट्टी होने पर भी सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि न्यायपालिका भी राज्य के किसी भी अन्य हिस्से की तरह एक सार्वजनिक सेवा है। क्या आप पुलिस विभाग या अस्पतालों को महीनों तक बंद रख सकते हैं। संजीव सान्याल ने ये बातें दिल्ली में भारतीय महाधिवक्ता के सम्मेलन में कहीं। इस सम्मेलन का विषय 2047 में विकसित भारत के लिए भारत के कानूनी आधार की पुनर्कल्पना था। सान्याल बोले- कानून और न्याय समय पर लागू नहीं होते सान्याल ने आगे कहा कि भारत की सबसे बड़ी दिक्कत कानून और न्याय को समय पर लागू न कर पाना है। हमारे देश में समझौते और न्याय समय पर पूरे नहीं होते। इस वजह से भले ही हम सड़कों, इमारतों या शहरों पर बहुत पैसा खर्च करें, असली विकास रुक जाता है। उन्होंने एक 99-1 समस्या का जिक्र किया। असल में सिर्फ 1 फीसदी लोग नियमों का गलत इस्तेमाल करते हैं। लेकिन क्योंकि हमें भरोसा नहीं है कि अदालतें ऐसे मामलों को जल्दी सुलझा देंगी, तो सरकार सारे नियम ऐसे बनाती है।

इंदौर की अंकिता सोनी बनी मिस स्टारफेस ऑफ सेंट्रल इंडिया

इंदौर। मांडव के जेएमडी रिसोर्ट में मॉडलिंग आइकन इंडिया द्वारा आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में इंदौर निवासी अंकिता सोनी को मिस्टर वर्ल्ड रोहित खंडेलवाल द्वारा 'मिस स्टार फेस ऑफ़ सेंट्रल इंडिया' का ताज पहनाया गया। स्टारफेस ऑफ इंडिया, प्रखर शर्मा द्वारा स्थापित मॉडलिंग आइकन द्वारा आयोजित एक प्रमुख राष्ट्रीय मॉडलिंग प्रतियोगिता है। यह कार्यक्रम प्रखर शर्मा और जगदीश पुरोहित के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ।

इस प्रतियोगिता में पूरे भारत से प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिभा, आत्मविश्वास और शान का प्रदर्शन किया। इनमें से अंकिता सोनी ने सबसे अलग पहचान बनाई और यह प्रतिष्ठित खिताब जीतकर अपने परिवार और शहर का गौरव बढ़ाया। अंकिता, इंदौर के ज्वेलरी एवं हैंडीक्राफ्ट व्यवसायी कमलेश सोनी और सुनीता सोनी की सुपुत्री है। अपनी जीत के बाद अंकिता ने अपने परिवार और गुरुओं के प्रति उनके समर्थन और प्रोत्साहन के लिए आभार व्यक्त किया। अंकिता की इस उपलब्धि ने शहर को गौरवान्वित किया है तथा कई युवा प्रतिभाओं को अपने सपनों को साकार करने के लिए प्रेरित किया है।

चुनावी साल में शिक्षक बहाली बना सरदर्द!

● बिहार के शिक्षा मंत्री ने कुछ भी साफ-साफ नहीं कहा, अब क्या करेंगे अभ्यर्थी?

पटना (एजेंसी)। चुनावी साल में शिक्षक बहाली बिहार सरकार के लिए सरदर्द बन गया है। पटना में पत्रकारों ने जब शिक्षा मंत्री सुनील कुमार से इस बाबत सवाल पूछा तो उन्होंने कुछ भी साफ-साफ नहीं कहा। दरअसल, बिहार में अभ्यर्थी लगभग हर सप्ताह प्रदर्शन कर रहे हैं, विज्ञापन निकालने की मांग कर रहे। जब ना तब पटना में सड़क जाम से शहरवालों को काफी फजीहत झेलनी पड़ रही है। ऐसा लगता है कि रिक्रूटमेंट प्रॉसेस इलेक्शन का एजेंडा बन गया है। अभ्यर्थियों को लगता है कि अगर नीतिश सरकार बदल गई तो विज्ञापन भी नहीं निकलेगा। इसे लेकर कैंडीडेट आशंकित हैं और जल्द विज्ञापन निकालने की मांग कर रहे हैं। मगर, सरकार की ओर से शिक्षा मंत्री ने इसे लेकर कुछ भी स्पष्ट नहीं कहा। बिहार के शिक्षा मंत्री सुनील कुमार ने विज्ञापन को लेकर कहा, मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने 2005 से शिक्षा विभाग को प्राथमिकता दी है। उनके कार्यकाल में लाखों शिक्षकों की भर्तियां हुईं, स्कूलों की संख्या बढ़ी और बुनियादी ढांचे में सुधार किया गया। लेकिन अब विभाग के अलावा निजी क्षेत्र की मदद से सीएसआर फंड का उपयोग किया जाएगा। इससे बच्चों को आधुनिक शिक्षा, डिजिटल लर्निंग और स्वास्थ्य सुविधाएं मिलेंगी। शिक्षा मंत्री सुनील कुमार ने पत्रकारों से बात करते हुए बताया, शिक्षा विभाग समाज को बदलने में सबसे बड़ा सहायक होता है।

डॉ. तेज प्रकाश व्यास डी.लिट व डी.एससी. उपाधियों से सम्मानित

नई दिल्ली। शिक्षा विद, वैज्ञानिक एवं सनातन धर्म के ज्ञाता डॉ. तेज प्रकाश व्यास को इन क्षेत्रों में उनके असाधारण अवदान के लिए विश्व संस्कृति एवं पर्यावरण संरक्षण आयोग द्वारा उन्हें मानद उपाधियों से अलंकृत किया गया। डॉ.व्यास को कांस्टीट्यूशन क्लब में आयोजित भव्य समारोह में 1 डी.लिट तथा 5 डीएससी. उपाधियां प्रदान की गईं। डॉ. व्यास के अनुसार यह सम्मान उनकी पांच दशकों की

पाँच दशकों की अखंड तपस्या और अनुपम योगदान का परिणाम है और न केवल भारत की अस्मिता का गौरव है, बल्कि विश्व मानवता के लिए प्रेरणाप्रद भी है। आयोग डॉ. व्यास की प्रशस्ति में कहा कि आयोग अपने ऐतिहासिक वार्षिकोत्सव पर वह ऐसे महापुरुष का अभिनंदन कर रहा है, जिन्होंने पाँच दशकों से अधिक समय तक अपने निरंतर शोध, साधना और सेवा के द्वारा राष्ट्र और विश्व की अमूल्य धरोहर को समृद्ध किया। जीवन-विज्ञान और चेतना के संगम पर डॉ. व्यास के शोध अद्वितीय और प्रेरणादायी हैं। आधुनिक अनुवांशिकी, आणविक जीवविज्ञान और विकासात्मक जीवविज्ञान में उनके कार्य ने मानवता को नई दिशा दी। विज्ञान के साथ साथ भारतीय संस्कृति की अमर ज्योति को प्रज्ज्वलित करने, श्रीमद्भगवद्गीता की स्थितप्रज्ञता, श्रीमद्भागवत के कपिल देवहूति संवाद और आदि शंकराचार्य की अद्वितीय प्रज्ञा को विश्वपटल पर प्रतिष्ठित करने के लिए डॉ. व्यास को यह अलंकरण प्रदान किया गया है।

बर्लिन, हीथ्रो, ब्रूसेल्स लंदन...थम गई 'उड़ान'

● यूरोप में कई एयरपोर्ट पर हो गया टेक्निकल ब्लैकआउट

लंदन (एजेंसी)। यूरोप के कई बड़े हवाई अड्डों पर शनिवार को साइबर हमले की वजह से अफरातफरी मच गई है। रिपोर्ट के मुताबिक साइबर हमला करते हुए कई एयरपोर्ट पर चेक-इन और बोर्डिंग सिस्टम को ठप कर दिया गया है। जिससे दर्जनों हवाई अड्डों पर यातायात ठप हो गई है। समाचार एजेंसी रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक, एक तृतीय-पक्ष सेवा प्रदाता को निशाना बनाकर किए गए साइबर हमले ने लंदन के हीथ्रो, ब्रूसेल्स और बर्लिन सहित कई प्रमुख यूरोपीय हवाई अड्डों पर चेक-इन और बोर्डिंग सिस्टम ने काम करना बंद कर दिया है। इससे दर्जनों फ्लाइट को कैंसिल कर दिया गया है।

मारीच बनकर अपराधी आया, यूपी पुलिस ने छलनी किया

● दिशा पाटनी वाले मामले में एनकाउंटर पर बोले सीएम योगी

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री सीएम योगी आदित्यनाथ ने बरेली में बॉलीवुड एक्ट्रेस दिशा पाटनी के घर पर फायरिंग मामले के आरोपियों की तुलना मारीच से कर दी। दरअसल, रामायण में मारीच का वर्णन है। वह भागवान श्रीराम और माता सीता को भ्रमित करने में सफल हुआ था। स्वर्ण हिरण का रूप धरकर आए मारीच ने सीता माता के मन में उसे हासिल करने की ललक पैदा की। माता सीता ने अपनी इच्छा भगवान राम से बताई। इसके बाद रावण ने साधु वेश धरकर माता सीता का अपहरण कर लिया था। अब सीएम योगी आदित्यनाथ रामायण के इस पात्र की तुलना दिशा पाटनी के घर पर फायरिंग करने वाले अपराधियों से कर दी। साथ ही, उन्होंने कहा कि यूपी पुलिस की गोलियों ने इन मारीच को छलनी कर दिया। सीएम योगी के इस बयान की चर्चा हो रही है।

नवरात्र से पहले बेटियों-बहन के खिलाफ होने वाले अपराध के मामलों में सीएम योगी का यह बयान खासा महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

सशक्त नारी, समृद्ध प्रदेश पर जोर

कार्यक्रम में सीएम योगी ने मिशन शक्ति के तहत महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण से जुड़ी पहल समृद्ध नारी, समृद्ध उत्तर प्रदेश का उल्लेख किया। उन्होंने निर्देश दिया कि मिशन शक्ति से संबंधित फोल्डर हर कॉलेज और स्कूल की बालिकाओं तक पहुंचना चाहिए। उन्होंने कहा कि शारदीय नवरात्रि का पर्व शुरू होने वाला है, ऐसे में नारी शक्ति के सम्मान और सुरक्षा को लेकर प्रशासन को पूरी सख्ती से तैयारी करनी होगी। सीएम योगी ने कहा कि हर विभाग को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी।

महिला पुलिस बल की सीएम ने की चर्चा

मुख्यमंत्री ने बताया कि 2017 तक यूपी पुलिस में केवल 10 हजार महिला कार्मिक थीं। लेकिन उनकी सरकार के भर्ती अभियानों के बाद अब यह संख्या 44 हजार से ज्यादा हो गई है। उन्होंने कहा कि अब प्रदेश में ही 60,200 से अधिक पुलिस आरक्षियों की ट्रेनिंग कराई जा रही है, जिससे सुरक्षा व्यवस्था मजबूत हो रही है। सीएम ने कहा कि 2017 से पहले पोषण योजनाओं में भ्रष्टाचार होता था और महिलाएं लाभ से वंचित रह जाती थीं। मुख्यमंत्री ने कहा कि अब प्रदेश की 60 हजार से ज्यादा महिला स्वयंसेवी समूह की बहनें हर महीने आय अर्जित कर रही हैं और आत्मनिर्भर बन रही हैं। सरकार ने बेटियों की सुरक्षा पर ध्यान दिया है।

जमीन के नीचे खुला 'बुलेट' का 5 किमी लंबा रास्ता

मुंबई (एजेंसी)। अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना के तहत लगभग 5 किलोमीटर

लंबी शिलफाटा-घनसोली सुरंग के निर्माण की दिशा में शनिवार सुबह कामयाबी मिली। नेशनल हाई स्पीड रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एनएचएसआरसीएल) ने यह जानकारी दी। केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव घनसोली शाफ्ट पर मौजूद थे, जब नियंत्रित विस्फोट के जरिए यह सफलता हासिल की गई। एनएटीएम का उपयोग करके खोदी गई यह सुरंग बीकेसी को जोड़ेगी।

मोदी ने वोट चुराकर सत्ता हासिल की, हमारे पास इसके पुख्ता सबूत

● राहुल बोले-जल्द हाइड्रोजन बम फोड़ेंगे,ईसी वोट चोरों को बचा रहे

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने शनिवार को कहा कि उनके पास वोट चोरी के ऐसे सबूत हैं, जिन्हें वे जल्द ही सबके सामने लाएंगे। उसके बाद किसी को भी शक नहीं रहेगा कि मोदी ने वोट चोरी कर सत्ता हासिल की है। केरल के वायनाड में राहुल ने कहा- हमारे पास 100 फीसदी सबूत हैं। जल्द

ही हम एक 'हाइड्रोजन बम' फोड़ेंगे, जो पूरी सच्चाई देश के सामने रख देगा। यह मामला ओपन एंड शट है। हम बिना सबूत के कभी कुछ नहीं कहते। इस बार भी हमारे पास पूरे सबूत हैं। उन्होंने कहा कि पिछली प्रेस कॉन्फ्रेंस में भी कांग्रेस ने वोटर लिस्ट में धांधली के उदाहरण दिए थे। महादेवपुरा और आलंद में गलत तरीके से वोट जोड़ने और काटने की घटनाएं दिखाई थीं। कांग्रेस सांसद ने कहा-सीईसी चोरी करा रहे हैं।

ब्रिटेन नए इमिग्रेशन कानून के तहत एक भारतीय को निकालेगा

● अवैध तरीके से पहुंचा था, ट्रम्प ने सेना लगाकर इमिग्रेशन रोकने की सलाह दी थी

लंदन (एजेंसी)। ब्रिटेन अपने नए इमिग्रेशन कानून और फ्रांस के साथ हुए समझौते के तहत पहली बार एक अवैध भारतीय अप्रवासी को वापस भारत भेजेगा। ब्रिटेन के गृह मंत्रालय ने बताया कि यह इंसान अगस्त में छोटी बोट से इंग्लिश चैनल पार करके गैरकानूनी तरीके से ब्रिटेन आया था। ब्रिटेन की होम सेक्रेटरी शबाना महमूद ने इसे अवैध अप्रवासियों को रोकने का बड़ा कदम बताया। उन्होंने कहा- यह हमारी सीमाओं को सुरक्षित करने की शुरुआत है। जो लोग गैरकानूनी तरीके से आएंगे, उन्हें वापस भेजा जाएगा। ब्रिटिश सरकार इस इंसान को भारत वापस जाने के लिए पैसे देगी। अगर वह मर्जी से नहीं गया, तो उसे जबरन वापस भेजा जा सकता है। वह ब्रिटेन में शरण नहीं मांग सकता है।

सीट शेयरिंग पर बीजेपी-जेडीयू में डील पक्की

● बिहार में अब चिराग-मांझी से होगी बात, फिर ऐलान

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार की राजनीति में गुरुवार को उस समय नई हलचल मच गई जब मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात की थी। शाह उसी दिन पटना में आयोजित अपने सार्वजनिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेने पहुंचे थे। दोनों नेताओं के बीच हुई इस मुलाकात को लेकर राजनीतिक गलियारों में अटकलें तेज हो गई हैं कि यह आगामी विधानसभा चुनावों के लिए सीट बंटवारे की तैयारियों का हिस्सा है। आपको बता दें कि इस मुलाकात के दौरान बिहार भाजपा के नेताओं के अलावा नीतिश कुमार के दो खास सिपहसालार संजय झा और विजय चौधरी भी इस बैठक में शामिल हुए। सूत्रों के हवाले से कहा गया है कि

भारतीय जनता पार्टी और जनता दल यूनाइटेड के बीच सीटों के बंटवारे को लेकर शुरुआती खाका तैयार हो चुका है। अब इसे लेकर लोजपा, हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा और राष्ट्रीय लोक समता पार्टी जैसे सहयोगी दलों से भी बातचीत चल रही है। गठबंधन के भीतर संतुलित हिस्सेदारी का प्रयास जारी है।

शहर के विजय नगर व लसूड़िया में दो-दो टीआई, कुछ और थानों में दो टीआई होंगे

कई थानों के प्रभारियों को बदला गया, डीसीपी मुख्यालय से जारी हुए

इंदौर। मध्य प्रदेश में इंदौर पहला शहर बन गया है, जहां कानून और व्यवस्था को मज़बूत बनाने के लिए चुनिंदा थानों में दो टीआई नियुक्त करने का प्रयोग शुरू किया गया। आज जारी आदेश के मुताबिक विजय नगर और लसूड़िया में दो-दो टीआई नियुक्त किए गए हैं। जल्द ही ये प्रयोग बाणगंगा और कनाड़िया थाने में किया जाएगा। बाद में यह व्यवस्था खजराना और चंदन नगर में भी लागू की जा सकती है। इस व्यवस्था में एक टीआई मुख्य रूप से जांच पर ध्यान केंद्रित करेगा। जबकि, दूसरा कानून-व्यवस्था, वीआईपी ड्यूटी और सार्वजनिक सेवा वितरण का काम संभालेगा। एक जूनियर टीआई भी जिम्मेदारियों को संतुलित करने में मदद करेगा। पुलिस आयुक्त प्रणाली के तहत शुक्रवार को पुलिस उपायुक्त (मुख्यालय) कार्यालय से थाना प्रभारियों के तबादले की सूची जारी की गई। आदेश के अनुसार, विजयनगर और लसूड़िया थानों में नए टीआई की नियुक्ति की गई है।

विजय नगर थाने का प्रभार अब मीना बौरासी को सौंपा गया है, जबकि लसूड़िया थाने में नीतू सिंह को जिम्मेदारी दी गई है। जारी आदेश के मुताबिक, निरीक्षक मनोज मिश्रा को खजराना थाने भेजा गया है, वहीं निरीक्षक राजीव श्रीवास्तव को बाणगंगा थाने का प्रभार मिला है। इसके अलावा निरीक्षक लोकेश भदौरिया को आजाद नगर और बबलू मुकरिया को सायबर सेल में पदस्थ किया गया है। इसी तरह निरीक्षक तिलक करोते को आजाद नगर से नगर निगम केंद्र में, सुरेश सिंह चौहान को सराफा से पलासिया और राजकुमार लिटोरिया को सराफा थाने भेजा गया है। आदेश में यह भी उल्लेख है कि निरीक्षक विजय बर्खे को अपराध एवं सुरक्षा शाखा, रवि प्रताप जादौन को आयुध शाखा और उदय तिवारी को बाणगंगा थाने में पदस्थ किया गया है। राम शाक्य को एरोड्रम थाने की जिम्मेदारी दी गई। पुलिस उपायुक्त (मुख्यालय) प्रकाश परिहार यह आदेश जारी किया है। **यह प्रयोग चार साल पुराना-** व्यस्त थानों में दो टीआई पदस्थ किए जाने के प्रयोग का खाका पुलिस आयुक्त संतोष कुमार सिंह ने पहले ही तैयार कर लिया था। इसके तहत शहर के चार सबसे व्यस्त थानों में सबसे पहले यह बदलाव की तैयारी की गई थी। इनमें से फिलहाल दो के लिए आदेश जारी किए गए। इस प्रयोग पर पहली बार दिसंबर 2021 में उस समय विचार किया गया था, जब इंदौर और भोपाल में पुलिस कमिश्नरी प्रणाली लागू किए जाने पर चर्चा हुई थी। यह प्रयोग दिल्ली और मुंबई में पुलिस व्यवस्था के आधार पर तैयार करने का विचार किया था। अब, पुलिस की बढ़ती चुनौतियों के साथ, अधिकारियों का मानना है कि थाना स्तर पर दोहरी कमान प्रणाली से कार्यकुशलता में सुधार होगा। **व्यस्त पुलिस स्टेशनों पर नजर -** इस प्रयोग के अनुसार, शहर के बड़े और व्यस्ततम थानों में बाणगंगा, लसूड़िया, विजय नगर और कनाड़िया में दो-दो टीआई तैनात करने पर विचार किया गया और शुक्रवार को विजय नगर और लसूड़िया के लिए आदेश भी जारी कर दिए गए। इसके बाद बाणगंगा और कनाड़िया में दो-दो टीआई नियुक्त होंगे। नए आदेश के मुताबिक विजय नगर और लसूड़िया में महिला टीआई नियुक्त की गई ताकि देर रात यहां होने वाली गतिविधियों पर अंकुश लगाया जा सके। **व्यवस्था महानगरों से सीखी-** यह व्यवस्था मूलतः दिल्ली, मुंबई, लखनऊ और कोलकाता के पुलिसिंग मॉडल का अध्ययन से लिया गया है। वहां रात्रि गश्त और समीक्षा प्रणालियों का प्रबंधन अलग-अलग तरीके से किया जाता है। इंदौर में पहले हुए सुधारों के सकारात्मक परिणामों से उत्साहित होकर इस नए ढांचे को शुरू किया गया है। इंदौर कमिश्नरेट में 33 पुलिस थाने हैं, जिनमें से प्रत्येक में अभी तक एक ही टीआई था। जबकि, अपराध शाखा, यातायात शाखा और पुलिस लाइन में ज़्यादा इंस्पेक्टर तैनात हैं। अधिकारियों का कहना है कि नई व्यवस्था से वर्तमान में पुलिस लाइन में तैनात इंस्पेक्टरों को भी अवसर मिलेंगे।

नजदीक से गुजर गई मौत, अभी उस दहशत से मुक्त नहीं हुआ

(मुकेश नागर)

इंदौर। सप्ताह भर पहले कालानी नगर से बड़े गणपति के बीच हुए बेकाबू ट्रक हादसे के दौरान मौत मेरे बिल्कुल पास से गुजरी थी। इतने पास से कि मेरे स्कूटर पर उसके निशान मौजूद हैं। मैं और मेरी पत्नी दोनों उस खौफनाक मंजर को भूल नहीं पा रहे। लगातार तीन रातों को हम सो नहीं सके, इसलिए कि हमको छूते हुए वो ट्रक यमराज की तरह पास से गुजरा था। उसी समय यह अहसास भी हुआ कि हमें किसी ने ट्रक के विपरीत दिशा में खींच लिया और हम सड़क पर गिरे जरूर पर खरोंच के अलावा कोई बड़ी चोट नहीं लगी।

इस हादसे के समय मैं पत्नी के साथ स्कूटर से बड़ा गणपति की तरफ जा रहा था। रामचन्द्र नगर के बाहर चौराहे पर अचानक पीछे से जोर-जोर से चिल्लाने के हृदय विदारक आवाज जें सुनाई दी। ये आवाज कान में सुनाई देते ही मैंने अपनी गाड़ी साइड में करने की कोशिश की। लेकिन, पलक झपकते ही ट्रक एकदम पास से टकराते हुए गुजरा। स्कूटर की टक्कर से मैं और पत्नी गिर गए। तभी बेतहाशा भागता ट्रक मेरी स्कूटर के एक हिस्से को कुचलते हुए गुजर गया। उस समय ऐसा लगा जैसे किसी चमत्कार ने हमें मौत के मुंह से खींच लिया। मौत के उस खौफ को हमने महसूस किया और आसपास भी

देखा। लगा कि ईश्वर मेरा हाथ थामे हुए हैं। परम पिता परमात्मा के सामने मौत की क्या बिसात कि हमें छू भी ले। कुछ पल तो मैं हतप्रभ ही रहा। ट्रक मेरे सामने मेरे स्कूटर को रौंदते हुए आगे निकल गया, पर मेरी जान ईश्वर ने बचा दी।

अगले ही पल मैं पत्नी को आसपास न देखकर बदहवास हो गया। सड़क पर नजर दौड़ाई तो चौराहे पर हर तरफ मातम पसरा था। रोने, चीखने और चिल्लाने की आवाज़ें आ रही थी। पलटकर देखा तो पत्नी सड़क पर गिरी हुई थी। इस दृश्य ने मेरी बदहवासी को थोड़ा कम जरूर किया, पर हादसे का दृश्य तो जैसे दिमाग में उतर गया था। पत्नी को सहारा देकर उठाने के बाद सामने गीतांजलि अस्पताल की तरफ बढ़ा, तो वहां घायलों की भीड़ दिखाई दी। पत्नी को पानी पिलाने के कुछ देर बाद सुध आई। तभी विचार आया कि हमें बचाने वाले प्रभु कहां हैं! अगले ही पल एक रिक्शा सामने आकर खड़ा हो गया। तत्काल रिक्शा में बैठकर पास ही में पारमार्थिक अस्पतालों में निशुल्क चिकित्सा करने वाले डॉ जीडी नागर के पास गए। उन्होंने प्राथमिक चिकित्सा के बाद जरूरी निर्देश देकर रवाना किया। यह सबकुछ इतना जल्दबाज़ी में घटा जैसे कोई ईश्वरीय शक्ति हमारे साथ चल रही हो। सामान्यतः मैं दोपहिया वाहन हेलमेट पहनकर ही चलाता हूं। पेट्रोल पंप पर पेट्रोल भराने के समय हेलमेट मेरे सिर पर ही था। पर, उस दिन हेलमेट पहनने से गर्मी और घुटन हो रही थी। इसलिए मैंने हेलमेट नहीं पहना, शायद यह अच्छा भी हुआ। यदि हेलमेट पहना होता, तो चौराहे पर शोर की आवाज सुनाई नही पड़ती और मेरी गाड़ी बीच सड़क पर ही चलती ओर शोर की आवाज न आने से में गाड़ी किनारे नहीं करता। संभव है कि हमारी फोटो अखबार में अलग संदर्भ में छप चुकी होती। यह ईश्वर की कृपा है कि उसने एक पल के अंतराल से हमे मौत के मुंह से बचा लिया। आज भी वह मंजर याद आता हैं तो सिहर उठता हूं कि कैसे ईश्वर ने बचाया। नहीं तो मौत तो साथ ही चल रही थी। यह प्रभु की कृपा ही है कि एक पल में उसने हमें मौत से दूर कर हमें जान बख्श दी।

फर्जी पुलिस बनकर घूमते युवक को यातायात पुलिस ने पकड़ा

इंदौर। गीताभवन चौराहा पर यातायात पुलिस की सतर्कता और चौकसी के चलते एक युवक पकड़ा गया जो खुद को फर्जी पुलिसकर्मी बताकर शहर में घुम रहा था। चालक ने खुद को पुलिसकर्मी बताकर भ्रमित करने की कोशिश की और एक नकली पुलिस आईडी कार्ड भी दिखाया। यह घटना उस समय सामने आई जब यातायात उपनिरीक्षक प्रकाश किरार, महिला आरक्षक भूली रडार और आरक्षक सुल्तान रावत यातायात प्रबंधन का कार्य कर रहे थे। इसी दौरान बीआरटीएस लेन से एक तेज रफ्तार बिना नंबर की मोटरसाइकिल आती हुई दिखाई दी। मोटरसाइकिल पर पुलिस का लोगो चस्पा था, जिससे वाहन संदिग्ध प्रतीत हुआ। पुलिस ने तुरंत उसे रोका और पूछताछ की। संदेह गहराने पर जब युवक की तलाशी ली गई तो उसके बैग से पुलिस की वर्दी भी बरामद हुई। पूछताछ में वह अपने बयान बदलता रहा और कोई वैध पहचान या नियुक्ति प्रमाण नहीं दे सका। इसके बाद यातायात पुलिस ने उसे तत्काल नजदीकी थाने के हवाले कर दिया। प्रारंभिक जांच में पता चला है कि युवक फर्जी पहचान का सहारा लेकर आम नागरिकों को गुमराह करने की फिराक में था। उसकी बाइक पर नंबर प्लेट न होने और पुलिस प्रतीक चिपकाने से संदेह और गहरा गया। यातायात पुलिस की सक्रियता से बड़ी धोखाधड़ी की कोशिश समय रहते नाकाम हो सकी। पुलिस अब युवक के आपराधिक इतिहास और मकसद की जांच कर रही है।

डांसिंग कॉप रंजीत सिंह की तबियत बिगड़ी, आटो वाले ने अस्पताल भेजा

डीआरपी लाइन से मालवा मिल आते समय गश खाकर गिरे

इंदौर। तीन दिन पहले युवती ने डांसिंग कॉप रंजीत सिंह पर अनर्गल आरोप लगाए थे। आरोपों का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल भी हुआ था। इस मामले में पुलिस ने उन्हें लाइन अटैच कर दिया था। आरोप लगने से वे काफी आहत थे। वे शुक्रवार को डीआरपी लाइन से मालवा मिल तरफ जा रहे थे। तभी मालवा मिल पर गश खाकर गिर गए तो ऑटो चालक ने उन्हें नजदीकी शैल्बी हास्पिटल में दाखिल कराया है। बताया जा रहा कि गुरुवार को एक युवती ने दो वीडियो वायरल कर रंजीत पर आपत्तिजनक मैसेज कर इंदौर बुलाने का आरोप लगाया था। आरोप सामने आने के बाद

एडिशनल कमिश्नर आरके सिंह ने रंजीत को लाइन अटैच कर दिया था। शुक्रवार को विभागीय अफसरों से सफाई देने के बाद लौटते समय उनकी तबीयत खराब हुई। सूत्रों का कहना है कि रंजीत की शिकायत पर संबंधित युवती के खिलाफ केस भी दर्ज किया जा सकता है। विभाग का मानना है कि रंजीत का यह व्यवहार पुलिस की छवि को धूमिल करता है। वहीं, राधिका सिंह नाम की इंस्टाग्राम आईडी से वायरल वीडियो में दावा किया गया है कि रंजीत ने युवती को दोस्ती का प्रस्ताव दिया, फ्लाइट से टिकट कराने और ठहरने की व्यवस्था तक करने का ऑफर दिया था। युवती ने इसे अनुचित बताते हुए इनकार किया और सोशल मीडिया पर आपत्ति दर्ज की। युवती को रंजीत का इस तरह का मैसेज अच्छा नहीं लगा। उसने सोशल मीडिया पर ही इसे लेकर आपत्ति दर्ज की है। इधर, ट्रैफिक जवान रंजीत सिंह का कहना है कि उस लड़की ने फेमस होने के लिए यह सब किया है। रंजीत का कहना है कि युवती ने खुद को मशहूर करने के लिए यह सब किया है। **फ्लाइट के टिकट का कहा** -राधिका सिंह ने वीडियो में रंजीत के बारे में कहा है कि उसने दोस्ती करने, इंदौर बुलाने और फ्लाइट से टिकट कराने का ऑफर दिया है। यही नहीं, उसने इंदौर में ठहरने की व्यवस्था करने की भी बात कही थी। युवती ने कहा कि यह मुझे गलत लगा तो रणजीत से साफ इनकार कर दिया। वीडियो में राधिका सिंह ने कहा है कि मुझे उसकी दोस्ती की जरूरत नहीं है। वह अपने हद में रहे।

पुलिस का सहयोग करने का आश्वासन दिया गया

बंगाली चौराहा क्षेत्र में व्यवस्थित यातायात के लिए बैठक की गई

इंदौर। शहर में यातायात को सुगम, सुरक्षित और व्यवस्थित बनाने के उद्देश्य से यातायात प्रबंधन पुलिस द्वारा निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में शुक्रवार को यातायात जोन-2 अंतर्गत बंगाली चौराहा, कनाडिया रोड क्षेत्र के व्यापारियों और स्थानीय जनप्रतिनिधियों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता एसीपी ट्रैफिक मनोज खत्री द्वारा की गई, जिसमें ट्रैफिक टीम के अन्य अधिकारी भी उपस्थित रहे। बैठक का मुख्य उद्देश्य क्षेत्र की वर्तमान यातायात व्यवस्था का मूल्यांकन करना और उसे बेहतर बनाने हेतु स्थानीय सहभागिता सुनिश्चित करना था। इस दौरान क्षेत्रीय व्यापारियों से उनके सुझाव भी आमंत्रित किए गए। बैठक

के उपरांत अधिकारियों और व्यापारीगणों ने पैदल भ्रमण कर चौराहे और आसपास की सड़कों की स्थिति का निरीक्षण किया। इस दौरान व्यापारियों से अपील की गई कि वे अपने दुकानों का सामान सड़क पर न रखें, जिससे पैदल यात्रियों और वाहनों की आवाजाही बाधित न हो। साथ ही छोटा राजवाड़ा से बंगाली चौराहा तक खुले हुए डिवाइडरों को व्यवस्थित करने और आवश्यकता अनुसार ही मार्ग खुले रखने पर चर्चा की गई। इसके अतिरिक्त, पार्किंग व्यवस्था पर भी विशेष ध्यान दिया गया। व्यापारियों से अनुरोध किया गया कि वे स्वयं एवं ग्राहकों के वाहनों को निर्धारित स्थानों पर ही पार्क करें, जिससे ट्रैफिक जाम की स्थिति उत्पन्न न हो। व्यापारी संघ और स्थानीय प्रतिनिधियों ने सभी सुझावों व दिशा-निर्देशों का पालन करने तथा यातायात पुलिस को पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। इस पहल से आने वाले दिनों में बंगाली चौराहा क्षेत्र की यातायात व्यवस्था में उल्लेखनीय सुधार की उम्मीद है।

स्क्वैश व कराते में ओवरऑल खिताब

इंदौर। 15 से 19 सितंबर तक इंदौर में आयोजित राज्य स्तरीय शालेय कुराश, कराते और स्क्वैश खेल प्रतियोगिता का शुक्रवार को समापन हुआ। इंदौर ने स्क्वैश और कराते दोनों वर्गों में ओवरऑल चैंपियनशिप अपने नाम की। जिला शिक्षा अधिकारी शांता स्वामी भार्गव ने बताया कि प्रतियोगिताएं बालक-बालिका वर्ग के 14, 17 और 19 वर्ष आयु वर्ग में विभिन्न स्थानों पर आयोजित हुई। कराते में 14 वर्ष वर्ग में इंदौर ने दोनों वर्गों में प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि कुराश में ग्वालियर और भोपाल अव्वल रहे। स्क्वॉश में इंदौर ने शानदार प्रदर्शन कर पहला स्थान हासिल किया। समापन समारोह में विजेताओं को पार्षद एमआईसी सदस्य निरंजन सिंह चौहान, पार्षद बरखा नितिन मालू और जिला शिक्षा अधिकारी ने ट्रॉफी और मेडल प्रदान किए।

इंदौर मेट्रो का दूसरा चरण ट्रायल रन सफल, अक्टूबर तक मंजूरी

5 किमी मार्ग पर 5 से 10 किमी घंटा की गति से किया

इंदौर। शहर की मेट्रो परियोजना ने एक और महत्वपूर्ण कदम आगे बढ़ाया है। शुक्रवार को इंदौर मेट्रो के दूसरे चरण का ट्रायल रन सफलतापूर्वक पूरा किया गया। यह परीक्षण सुपर कॉरिडोर स्टेशन क्रमांक-3 से एमआर-10 स्टेशन तक लगभग पांच किलोमीटर लंबे मार्ग पर पांच से 10 किलोमीटर प्रति घंटा की गति से किया गया। मध्य प्रदेश मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एमपीएमआरसीएल) के अधिकारियों के अनुसार, यह मार्ग 17.50 किलोमीटर लंबे प्राथमिकता गलियारे का हिस्सा है, जो गांधी नगर स्टेशन से रेडिसन चौराहा स्टेशन तक फैला है। पहले चरण में गांधी नगर से सुपर

कॉरिडोर स्टेशन क्रमांक-3 तक छह किलोमीटर मार्ग पर वाणिज्यिक परिचालन पहले ही शुरू किया जा चुका है। अधिकारियों ने बताया कि दूसरे चरण के वाणिज्यिक परिचालन के लिए अनुसंधान अभिकल्प एवं मानक संगठन (आरडीएसओ) और मेट्रो रेल सुरक्षा आयुक्त (सीएमआरएस) की मंजूरी जरूरी है। दोनों इकाइयों से अक्टूबर के अंत तक अनुमति मिलने की संभावना है। **पहला चरण 31 मई को शुरू-** गौरतलब है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 31 मई को अहिल्याबाई होल्कर की 300वीं जयंती पर इंदौर मेट्रो के पहले चरण का शुभारंभ किया था। इंदौर मेट्रो का पूरा नेटवर्क 31.32 किलोमीटर लंबा होगा, जिसकी अनुमानित लागत 7,500.80 करोड़ रुपये है। अधिकारियों के मुताबिक, इस परियोजना में कुल 28 स्टेशन बनाए जाएंगे। 35 लाख से अधिक आबादी वाले इंदौर में मेट्रो स्थानीय परिवहन को तेज, सुविधाजनक और पर्यावरण के अनुकूल बनाएगी।

पैसे के विवाद में युवक की हत्या सगे भाइयों, दोस्त ने की वारदात

इंदौर। शहर में लगातार दूसरे दिन हत्या की वारदात हुई। हीरानगर में लेनदेन के विवाद में सगे भाइयों, दोस्तों ने युवक की जघन्य हत्या कर दी। हत्या के चंद घंटे बाद ही पुलिस ने तीनों आरोपियों को गिरफ्तार लिया है। घटना गुरूवार-शुक्रवार की दरमियानी रात 12.30 बजे की है। मृतक की पहचान बबलू उर्फ उमेश जोशी के रूप में हुई है, जो कबीटखेड़ी इलाके का रहने वाला था। बताया जा रहा है कि कबीटखेड़ी स्थित नाले के किनारे बदमाशों का विवाद हुआ, जिसके बाद कुख्यात बदमाश चीना ठाकुर, उसका भाई पप्पी और दोस्त आशीष चौहान ने उमेश पर चाकू से हमला कर दिया। गंभीर हालत में अस्पताल ले जाते समय उमेश की मौत हो गई। बताया जाता है कि उमेश आरोपियों से बचने के लिए कुछ दूरी तक भागा भी था, लेकिन हमलावरों ने उसे पकड़कर वारदात को अंजाम दिया। पुलिस ने देर रात आशीष चौहान को हिरासत में लिया है, वहीं चीना ठाकुर और उसके भाई पप्पी को शुक्रवार दोपहर गिरफ्त में लिया है। उमेश की पहचान उसकी जेब में मिले कागजों से हुई। मृतक बबलू उर्फ उमेश जोशी अक्सर आरोपी चीना और पप्पी के साथ रहता था और नशा करता था। बबलू कोई काम नहीं करता था, उसका खर्च चीना ही उठाता था। करीब 10 दिन पहले उमेश का पुश्तैनी मकान स्कीम नंबर 51 में बिका था। पैसे आने के बाद तीनों ने छककर शराब पी। इसी दौरान चीना ने उमेश से कहा कि मकान बिकने के बाद मिले हिस्से में से रुपए मुझे भी चाहिए। इस पर उमेश ने पैसे देने से इनकार कर दिया तो तीनों बदमाश कहासुनी करने लगे। इस बीच, बदमाशों ने हमला कर दिया। उमेश को उसके पिता पहले ही छोड़ चुके थे। कई साल पहले मां की मौत हो गई थी। उसकी एक बहन और जीजा बाहर रहते हैं। उमेश इंदौर में अकेले रह रहा था और उसकी शादी नहीं हुई थी। पुलिस के मुताबिक, चीना ठाकुर और उसके भाई पप्पी के खिलाफ पहले से हीरानगर, परदेशीपुरा और लसूडिया थानों में अपराध दर्ज हैं। दोनों अक्सर इलाके में विवाद और उपद्रव करते रहते हैं। **अंधे कत्ल का ऐसे खुलासा-** जहां हत्या हुई, वहां सीसीटीवी कैमरे नहीं थे। लेकिन पुलिस ने गुरुवार शाम उमेश को पप्पी, चीना और आशीष के साथ घूमते हुए देखा था। रात में जब उमेश का शव मिला तो पुलिस को शंका हुई, क्योंकि कुछ घंटे पहले ये सभी दो बाइक पर एक चौराहे से गुजरते दिखाई दिए थे। इसी आधार पर पुलिस ने जांच आगे बढ़ाई और देर रात आरोपियों को अलग-अलग जगहों से हिरासत में ले लिया। आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

रिंग रोड के बंगाली चौराहे से बिचौली की तरफ जाने वाले रास्ते को ट्रैफिक पुलिस ने बिना सोचे-समझे 15 दिन पहले सीमेंट के बैरिकेट लगाकर होल्कर प्रतिमा के पास से बंद कर दिया था। इससे लोग बहुत ज्यादा परेशान हो गए थे। ऐसी स्थिति में उन्हें कनाड़िया रोड पर आगे जाकर वापस पलटकर आना पड़ता था। इसका सबसे ज्यादा असर व्यापारियों पर पड़ने लगा था। क्योंकि, ग्राहकों को विपरीत दिशा की दुकानों तक जाने के लिए कोई रास्ता ही नहीं बचा था। व्यापारियों ने पुलिस के अधिकारियों के सामने अपना विरोध दर्ज कराया और इसे मनमाना प्रयोग बताया। इसके बाद शुक्रवार को ट्रैफिक पुलिस ने बैरिकेट हटाकर इस रास्ते को फिर खोल दिया।

तेजाब फेंकने वाले पति की दोबारा धमकी

इंदौर। एमआईजी थाना क्षेत्र में रहने वाली महिला को उसके पति ने दोबारा जान से मारने की धमकी दी है। आरोपी ने पिछले साल पारिवारिक विवाद में पत्नी पर तेजाब फेंक दिया था, जिससे वह गंभीर रूप से झुलस गई थी। मामले में आरोपी मोनू रघुवंशी के खिलाफ हत्या के प्रयास सहित अन्य गंभीर धाराओं में एफआईआर की गई थी। दो दिन पहले ही वह जमानत पर बाहर आया और रास्ते में रोककर पत्नी को धमकी दी। एमआईजी पुलिस के अनुसार, 32 वर्षीय पीड़िता ने गुरुवार रात बताया कि वह विजयनगर इलाके में जॉब करती है और शाम को काम से लौट रही थी। रास्ते में मोनू पहले से मौजूद था। उसे देखकर महिला ने रास्ता बदल लिया, लेकिन मोनू ने उसका पीछा किया और नादिया नगर क्षेत्र में उसे रोक लिया। महिला के अनुसार, आरोपी ने धमकी दी कि अगर कोर्ट में मेरे खिलाफ बयान दिया तो जान से खत्म कर दूंगा। इसके बाद उसने मोबाइल फोन पर भी हत्या की धमकी दी। पुलिस ने बताया कि आरोपी की गिरफ्तारी के प्रयास किए जा रहे हैं। वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश पर उसकी पूर्व में मिली जमानत को निरस्त कराने के लिए कोर्ट में आवेदन दिया जाएगा।

सड़क दुर्घटना में मृत चारों की अर्थियां एक साथ निकाली गई

इंदौर। सांवेर थाना क्षेत्र के ग्राम रिंगनोदिया में दो दिन पहले शुक्ला ब्रदर्स की बस ने चार लोगों को टक्कर मार दी थी। गंभीर घायल होने के बाद चारों ने दम तोड़ दिया था। चारों मृतकों की शवयात्रा एक साथ गांव से निकली तो वहां मातम पसर गया। मृतकों में दो भाई इंदौर में काम की तलाश में आए थे, लेकिन वे हादसे के शिकार हो गए। पुलिस के अनुसार, इंदौर उज्जैन के बीच रिंगनोदिया ग्राम के यहां शुक्ला ब्रदर्स की बस नंबर एमपी-09-एफए-6390 ने बाइक पर इंदौर आ रहे महेन्द्र सोलंकी, उनकी पत्नी जयश्री, बेटे जिगर और तेजस को जोरदार टक्कर मार दी थी। इस हादसे में महेन्द्र, जयश्री और जिगर की मौके पर मौत हो गई थी। गंभीर घायल तेजस ने दूसरे दिन अरबिंदो अस्पताल में दम तोड़ दिया। गुरुवार को चारों के शवों का पोस्टमार्टम हुआ था। यहां शाम 7 बजे के लगभग जब शव गांव में पहुंचे तो सभी स्तब्ध थे कि गांव में हंसी-खुशी इंदौर जाने वाला परिवार किस तरह से अर्थी के रूप में आया है। इसके बाद शवों को आधे घंटे घर पर रखकर उनका अंतिम संस्कार किया गया। यहां पर उनके भाई के बेटे ने सभी को मुखाग्नि दी। **दो भाई आए थे इंदौर-** महेन्द्र अपने एक अन्य भाई के साथ कई साल पहले इंदौर आ गए थे। वे देवगुराड़िया में चाय की दुकान चलाते थे। उनका मूसाखेड़ी इलाके में घर भी बन रहा था, जिसमें दो दिन पहले ही वहां छत भराई थी। एक भाई निजी कंपनी में काम करता है। वहीं दो भाई गांव में रहते हैं। परिवार किसानी के काम से जुड़ा है। भाई ने बताया कि दोनों बच्चों के गुरुवार को पेपर थे। इसलिए महेन्द्र जल्दबाजी में अपने घर के लिए निकल गए। उनके रिश्तेदारों ने बारिश होने के चलते उन्हें रोका था। महेन्द्र बाइक लेकर पत्नी और बच्चों के साथ वापस इंदौर आ रहे थे। पुलिस ने बस चालक के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है।

व्यंग्य

विश्वास व्यास
लेखक व्यंग्यकार हैं।

सोशल मीडिया पर पोस्ट 'कर'

मन झूम कर गा रहा है, अब जा कर आया मेरे बैचैन दिल को करार ! मेरी बनाई रिल्स का स्तर कितना ऊंचा हो गया है । इन्हें फुरसत में बैठे टाइमपासूओ की बजाय साहब लोग देखेंगे । जिन्होंने दिनरात मेहनत कर के यू पी एस सी पास की है । वैसे सही मायने में साहब लोगों के साथ सामाजिक न्याय अब हुआ है । इतनी मेहनत के बाद धूल भरी फाइल्स देखने से कितना अच्छा होगा सोशल मीडिया प्रोफाइल्स देखना ! वैसे अभी तक यह साफ नहीं हुआ है कि आयकर वाले किस प्लेटफॉर्म को देखेंगे? क्योंकि इसका डिटेल प्रोसिजर नोटिफिकेशन आया नहीं है । हो सकता है, अलग अलग प्लेटफॉर्म्स के लिए कुछ उपविभाग बना दिए जाए । बताते है ऐ आई यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग किया जाएगा । मै तो कह रहा हूं जब आपने इतने काबिल अफसर यानी एक्चुअल इंटेलिजेंस कुर्सी पर बैठा है, तो आर्टिफिशियल काम क्यों करना?

कल पढ़ा कि आयकर विभाग लोगों के सोशल मीडिया पर नजर रखेगा। कर चोरी का पता लगाएगा। मैं यह विचार सुनकर ही बौरा गया हूं। मेरे सोशल मीडिया प्रोफाइल को कुछ प्यारे दोस्तों, पड़ोसियों, रिश्तेदारों और चंद जल कुकड़ो के सिवाय आज तक किसी ने देखा नहीं था।

आगे से खुद सरकार देखेगी। कितना मजा आएगा जब आयकर भवन के सुनसान, रहस्यमयी गलियारों में मेरी रिल्स देखी जाएंगी। रिटर्न के बजाय रिल्स का असेसमेंट होगा। आज तक मुझ पर किसी ने नजर डाली ही नहीं। आखिर सरकार ने मुझ आम आदमी का दर्द समझा।

मन झूम कर गा रहा है, अब जा कर आया मेरे बैचैन दिल को करार ! मेरी बनाई रिल्स का स्तर कितना ऊंचा हो गया है। इन्हें फुरसत में बैठे टाइमपासूओ की बजाय साहब लोग देखेंगे। जिन्होंने दिनरात मेहनत कर के यू पी एस सी पास की है।

वैसे सही मायने में साहब लोगों के साथ सामाजिक न्याय अब हुआ है। इतनी मेहनत के बाद धूल भरी फाइल्स देखने से कितना अच्छा होगा सोशल मीडिया प्रोफाइल्स देखना ! वैसे अभी तक यह साफ नहीं हुआ है कि आयकर वाले किस प्लेटफॉर्म को देखेंगे? क्योंकि इसका डिटेल प्रोसिजर नोटिफिकेशन आया नहीं है। हो सकता है, अलग अलग प्लेटफॉर्म्स के लिए कुछ उपविभाग बना दिए जाए। बताते है ऐ आई यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग किया जाएगा। मै तो कह रहा हूं जब आपने इतने काबिल अफसर यानी एक्चुअल इंटेलिजेंस कुर्सी पर बैठा है, तो आर्टिफिशियल काम क्यों करना?

कितना मनोरम दृश्य होगा। जब रिटर्न्स के मनहूस, बेमजा आंकड़ों की भीड़ में,

एक बाला की रील, तेनु काला चश्मा लगदा है

देखकर साहब चश्मा उतारकर स्क्रीन के पास झुकते हुए क्लर्क को बोलेंगे,

हम्म... ये चश्मे का खर्च तो डिक्लेयर नहीं किया इसने !

कुल मिलाकर कर संग्रह की दृष्टि से ये महान विचार है। मेरे इस मामले में कुछ सुझाव है।

इसके लिए कुछ नई पोस्ट बनाई जा सकती है। जैसे रील इंस्पेक्टर, स्टेटस चेकर, ट्वीट एनालिस्ट !

इनके ऊपर एक आई टी ओ मतलब इंस्टाग्राम ट्विटर ऑफिसर भी बनाया जा सकता है।

नए बजट में फॉलोवर्स की संख्या पर भी टैक्स लगाया जा सकता है। कमेंट्स और लाइक्स ज्यादा होने पर कुछ छूट का प्रावधान कर दे। 80 जी वाले दान और कर बचाने वाले निवेश की जगह एस आई पी यानी स्टेटस इन्वेस्टमेंट स्कीम लानी चाहिए।

नाचने गाने वाली रील को अधिक छूट दी जा सकती है। लेकिन ज्ञान बांटू पोस्ट को हॉयर स्लैब में रखना आवश्यक होगा।

रिटर्न के फॉर्म में सेल्फ डिक्लेरेशन पोस्ट अटैच करने की सुविधा दी जानी चाहिए। सोशल मीडिया के अतिरिक्त व्यक्तिगत रूप से भेजे जा रहे वीडियो को अन्य स्त्रोत से आय शीर्षक में रखा जाए। अधिक शेयर या डिलीट कर दी गई पोस्ट को टी डी एस (ट्रांसफर्ड एंड डिलीटेड सोशल पोस्ट) मानकर कर लेना चाहिए। रोज पोस्ट न करने वालों पर पेनल्टी लगाई जाए। और आखिरी में एक सोशल मीडिया पोस्ट ट्रिब्यूनल बनाया जाए। जिसमें

इन्फ्लूएंसर मित्रों की नियुक्ति हो।

खैर सुझावों के बाद कुछ बात परेशानी की भी कर लेते है।

थोड़ी सी दिक्कत बेचारे सी ए यानी कर सलाहकारों के लिए जरूर हो सकती है।

इन्हें अब आर्टिकल की जगह आर्टिस्ट रखने पड़ सकते है। जो लोगों को टैक्स की बजाय पोस्ट में लिखे जाने वाले टैक्स्ट की सलाह दे।

सी ए लोगों को बैलेंस शीट में प्रॉफिट मैनेज करने के बजाए लोगों की प्रोफाइल मैनेज करना होगी। कर्मचारियों को टेली जैसे अकाउंटिंग सॉफ्टवेयर की जगह बैली डांस सीखना पड़ सकता है। क्योंकि ज्यादातर शॉर्ट्स उसी के आते है। एक्सेल शीट्स के साथ डीजे बिट्स की जानकारी भी रखना होगी।

यह तय करना मुश्किल रहेगा कि पोस्ट देखकर अधिकारी खुद लाइक कर दे तो कैपिटल गेन शॉर्ट टर्म होगा या लॉन्ग टर्म?

यदि विश्वास व्यास की पोस्ट पर वह सिर खुजाने लगे तो टैक्स कितना लगेगा?

वैसे इन छोटी मोटी परेशानियों से कोई फर्क नहीं पड़ेगा। आखिर सरकार सोशल काज के लिए सोशल मीडिया का उपयोग कर रही है।

सीधा सा फंडा है कि बेटा, जीवन में कुछ कर या मत कर, तुझसे हम ले रहेंगे कर !

कितनी अच्छी बात है कि अभी तक फालतू समझा जा रहा सोशल मीडिया पोस्ट राष्ट्रनिर्माण में योगदान देगा।

आपके हैंडल से मुफ्त सुविधाएं देने की योजनाएं हैंडल होगी। इससे बड़ा पुण्य क्या होगा?

इसलिए आप और कुछ करे न करे, सोशल मीडिया अपडेट करते रहे। मैने ये लिखने से पहले ही गोल्ड लोन का आवेदन दे दिया है। मुझे पता है, यह लेख पोस्ट होते ही वायरल हो जाएगा और पीछे पीछे नोटिस आता ही होगा ! पर देश के लिए कुर्बानी देना ही होती है और मैं तैयार हूं।

करोगे याद तो, हर बात याद आयेगी

पुस्तक समीक्षा

राजा दुबे
समीक्षक

जनसम्पर्क विभाग के एक चुस्त-मुस्तैद और विलक्षण मेधा के धनी अधिकारी जिन्होंने अपने भीतर के निर्भीक और तथ्यान्वेषी पत्रकार को हमेशा जीवित रखा ऐसी शख्सियत - मनोज पाठक को चार साल पहले कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर में हमने खो दिया था । मनोज पाठक के इस असमय अवसान से क्षुब्ध उनके अभिन्न साथियों में से एक सुरेश गुप्ता ने उनके स्मरण के परिप्रेक्ष्य में उनकी यादों को शब्द देने वाले मित्रों , उनसे स्नेह रखने वाले वरिष्ठजन और मनोज के अभिभावक तुल्य गणमान्य व्यक्तियों के स्मृति आलेख को एक पुस्तक की शक्ल में छापकर मनोज के सशरीर न होने पर भी उनके होने कि अनुभूति को एक आकार दिया है । मनोज पाठक के अवदान पर केन्द्रित यह पुस्तक ' मित्र स्मृति- स्मरण मनोज पाठक ' एक सप्ताह पहले सुरेश गुप्ताजी ने मुझे भिजवाई थी ।

मैंने पुस्तक के एक -एक संस्मरण को पढ़ा और उन्हें पढ़कर लगा मनोज आज़ भी न्यू मार्केट भोपाल के कॉफी हाउस में मेरे सामने बैठा है और हम वर्ष 1987 में भारत-भवन में चल रहे -'विश्व कविता 'के व्याख्यान सत्र के नोट्स को साझा कर मनोज नवभारत के लिये और मैं चौथा संसार के लिये कापी तैयार कर रहे हैं । कुछ विवेच्य मुद्दों पर मैं चाहता था कि मनोज मेरे लिखे पर असहमति जताये मगर वो हर बार - 'ठीक है ' कह कर मेरे लिखे को ओ के करता । वो एक सिद्धहस्त पत्रकार

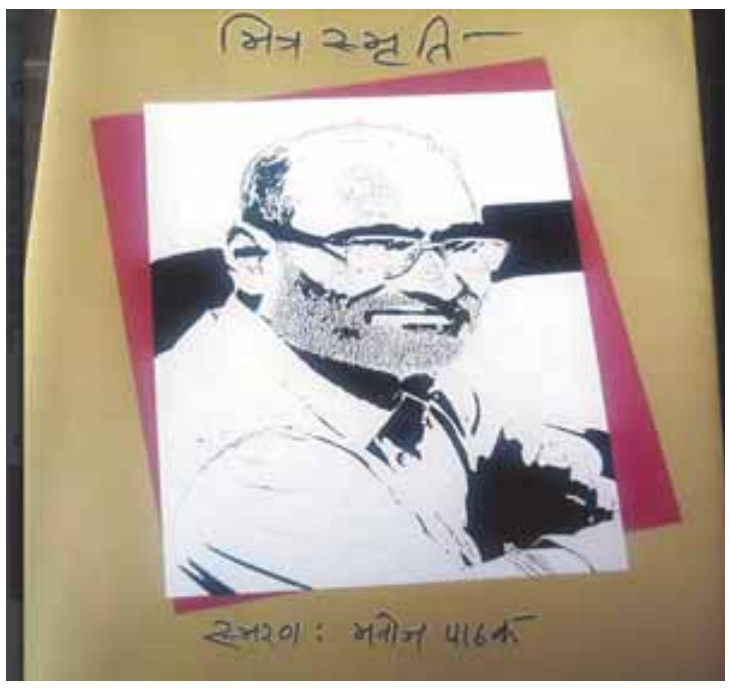

और मैं मात्र अनगढ़ प्रेसनोट लिखने वाला जनसम्पर्ककर्मी । अखबार के लिये समाचार बनाने में भी मैं उसमें भारी भरकम शब्दों और मुहावरों का गैर ज़रुरी तड़का लगाता और मनोज शालीनता से उस पर 'ठीक है' का सर्टिफिकेट चस्पा कर देता ।

मनोज ,तुम उस दिन यदि मुझे मेरी खामी बताने में संकोच नहीं करते तो मैं भी साहित्यिक पत्रकारिता के मोहजाल में यूँ न उलझकर अखबारों के लिये समाचार लिखने पर तुमसे कुछ सीख जाता । तुम्हें जब सप्रे संग्रहालय ने संतोषकुमार शुक्ल स्मृति लोक सम्प्रेषण पत्रकारिता सम्मान दिया था तब भी मैंने ' मध्यप्रदेश संदेश' में तुम्हारी इसी समाचार लिखने की लोक सम्प्रेषण शैली की प्रशंसा की थी ,जो तुमने संकोचवश मुझे नहीं सिखाई । बहरहाल यह विषयांतर हो रहा है मैं बात कर रहा था सुरेश गुप्ता द्वारा सम्पादित तुम्हारे बारे में लिखे संस्मरणों के संकलन -' मित्र स्मृति ' की ।

ऐसे संकलन की समीक्षा लिखने का मुझे ज़रा भी अनुभव नहीं है मगर इस संकलन के संस्मरणों को पढ़कर लगा मनोज पाठक को खो देना कितनी बड़ी क्षति है । संकलन में मनोज से जुड़े सभी संस्मरण उनकी मेधा को परत दर परत उजागर करते हैं । संस्मरणों को में हमेशा अभिव्यक्ति का सबसे प्रमुख साधन मानता रहा हूँ। वर्ष 2022 में जब फ्रांसिसी लेखिका ऐनी एर्नाक्स को उनके संस्मरण लेखन पर साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला और संस्मरण लेखन विधा की श्रेष्ठता प्रतिपादित हुई तब से ही मैं इस विधा की ताकत का कायल हूँ ।

' मित्र स्मृति ' में मनोज के बारे में लिखें गये एक एक संस्मरण उनकी प्रतिभा , उनके सौम्य व्यवहार और उनके विनम्र स्वभाव को तो प्रतिबिंबित करता ही है साथ ही एक मेधावी पत्रकार के रुप में उनकी अपरिहार्य उपस्थिति की पुष्टि भी करता है । पुस्तक के बैक फ्लैप पर रागिनी जब लिखती हैं कि -' अरे मैं कहीं नहीं गया , झाँक के देखो अपने दिलों में , अभी भी मेरा राज़ है ' तब वाकई लगता है मनोज कहीं नहीं गया ,वो आज़ भी हमारे दिलों में है । पितृपक्ष चल रहा है मनोज हठात् काल के गाल में समाकर परलोक चला गया है अपनी मेधा के आदर्श हमें थमाकर । यह हम पर पितृऋण है मनोज जिसे हम ही नहीं हमारे बाद वाली पीढ़ी भी वहन करेगी ।

अपनी भाषा

कमलेश कुमार दीवान

हिंदी के गीत लिखे, हिंदी के मीत दिखें
प्रीति करें हिन्दी से यह भाषा अपनी है
यह भाषा अपनी है।

आज़ नमस्ते का युग आया है हिंदी से
विश्व कह रहा प्रणाम वह भाषा हिन्दी से
यह भाषा है पुनीत,गाओ हिंदी के गीत
विश्व में सजगता है हम सब जाएंगे जीत
यह भाषा अपनी है।

भारत का भाव बने, वैश्विक अनुराग बने
आओ मिलजुल कर हम हिंदी का बाग बनें
भाषाएं सब जाने,हम हिंदी को अपनाएं
गीत गाएं हिंदी के,हम हिंदी में बतियायें
रचना हों हिंदी में अभिलाषा अपनी है
हिंदी मय हिंदी हो यह आशा भी अपनी है
यह भाषा अपनी है।

संस्कृततनया

अनुपमा अनुश्री

हिंदी का है अनुग्रह महान
इसने दिया ज्ञान,मान
धन, पुण्य, आत्मसम्मान
हिंदी भाषा नहीं
जीवन का कुशल क्षेम है
परम ब्रह्म से जोड़ने वाला
शब्द ब्रह्म है
संस्कृततनया के
अक्षर -अक्षर से प्रेम है।
शब्द- भाव सौंदर्य से
करती है श्रृँगारित
जिससे अस्मिता, ऊर्जस्विता
स्वाभिमान है सुरक्षित
मेरे मन प्राण, संवेदना से मुखरित
अनुभव, अर्थ जिसमें निहित।
सदियों ने जिन राहों पर चल
गौरवशाली इतिहास रचा
वर्तमान भी उन राहों पर चल
अपनी भाषा, संस्कृति से प्रेम कर
स्वर्णिम भविष्य लिखे।
जननी जन्मभूमिश्च
स्वर्गादपि गरीयसी
को साकार करे।

लघुकथा

सद्गति

अविनाश अग्निहोत्री

रामबाबू को शांत हुए आज पूरे तेरह दिन बीत गए थे।

इन दिनों उनके बच्चों ने उनकी आत्मा के उद्धार के लिए खूब पूजा पाट आदि किए।

फिर आज जब पंडित नोटो से भरा एक थाल लेकर उनकी पत्नी के समक्ष उनसे बोला कि अपने पति की आत्मा की सद्गति के लिए इस थाल में कुछ रुपए संकल्प करके डालिए।

तब पत्नी के मन में एक विचार सहसा कौंध गया कि मेरे यही बच्चे,उनके बीमार रहते अगर अपनी-अपनी मजबूरी का बहाना न बनाकर।

एक पिता के प्रति अपनी जिम्मेदारियों से मुंह न मोड़ते तो शायद आज वो जिंदा होते।

मुहावरे, लोकोक्तियाँ, कहावतें हमारी वसीयतें हैं

भाषा

अमर खनूजा चड्ढा
लेखक साहित्?यकार हैं।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

भाषा

अमर खनूजा चड्ढा
लेखक साहित्यकार हैं।

तकनीकी हर समय नए आविष्कार करती है और अपने उत्पादों में बेहतरी भी करते जाती है। आज की समझने की भाषा में कहें तो बैटर वर्शन या अपग्रेड करती है हमारे जीवन में सामाजिक माध्यमों का अहम् हिस्सा है। पत्र,पत्रिकाओं,अखबार रेडियो,टीवी,कंप्यूटर से लेकर ,इंटरनेट मोबाइल और आगे ए-आई तक हम आ पहुंचे हैं। तकनीकी अकेले नहीं आती वह अपने साथ देश की भाषा,आचार ,विचार और संस्कृति को साथ लाती है। यह देखकर खुशी मिलती है कि इन सारे माध्यमों में हिंदी भाषा का प्रयोग किया जा रहा है। यूट्यूब, ब्लॉग्स, नेटफ़्लिक्स में विषय विस्तार हुए हैं लेकिन देवनागरी लिपि और भाषा का तिरस्कार किया जा रहा है। इन माध्यमों का कितना दुष्प्रभाव पड रहा है यह उदाहरण सबके सामने हैं।

मुझे लगता है हमने अपने पर्व,परंपरा संस्कृति और धरोहरों को सजाया है। आगे आने वाली पीढ़ियों को वसीयत और विरासत के रूप में दिया है लेकिन भाषा और साहित्य की बात करें तो सबसे दुखद पहलू नज़र आता है कि यहाँ भाषा ही स्थानापन्न(रिप्लेस)हो रही है तो साहित्य की बात तो दूर रही।

आम बोलचाल में अखबारों, मीडिया में व्याकरण के नियम तो दूर की बात भाषा की शुद्धता ही नहीं है। सिर्फ़ एक ही भाषा अंग्रेजी का अधिपत्य बढ़ने लगा है। हिंदी भाषा अशुद्ध रूप से लिखी जा रही है। इसका स्वरूप विकृत और अटपटा किया जा रहा है। हमारी कोशिश होनी चाहिए कि हम बेमतलब के अंग्रेजी शब्दों के स्थान पर अपनी क्षेत्रीय, लोकभाषा, मातृभाषा के शब्दों का उपयोग करें, नहीं तो आने वाली पीढ़ी के लिए भाषा हस्तांतरित होते-होते हिंदुस्तानी की बात छोड़िये इंग्लिशस्तानी हो जाएगी। भाषा शास्त्री डेविडसन का कहना है कि -कोई भी भाषा अपने नियमों के कारण नहीं बल्कि अपने समाज के लोगों की उपेक्षा नकारात्मकता के कारण विलुप्त हो जाती है।

आज कल मुहावरे,लोकोक्तियाँ, कहावतें] पहेलियां और लोक गीतों की अवहेलना देखती हूँ तो दुःख होता है। यह हमारी संस्कृति की पहचान हैं जो सदियों का सफ़र और संघर्ष तय करके चली आ रही हैं। हमारी वसीयत है। इसे हमें अपनी कविता कहानियां लेख में शामिल करना चाहिए। कहावतें हमारे बुज़ुर्ग जैसी हैं जो हमें भिन्न परिस्थितियों में अनुभव की सीख देती है इसमें खगोलशास्त्र भूगोल तारामंडल से लेकर मनोविज्ञान का सार है। घाघ भड्डरी की लोकोक्तियाँ से लेकर किसी भी राज्य की कहावतें लें उसमें ज्ञान व्याहारिकता का असर और असल दिखता है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कोई भी विदेशी भाषा हावी होती है तो वह अपने देश की परंपरा,भावन, आचार,विचार,खानपान तो लाती है और मैं तो कहूँगी उद्दण्डता भी साथ लेकर आयी है और ढेर से लेकर आयी है जिसका भूत आज की पीढ़ी को चढ़ा रहता है। कभी -रोज़ डे ,टेडी बियर डे,मदर्स डे,फ़ादर डे, फ्रेंड्स । । जबकि हमारे साहित्य में संस्कृति में माता पिता गुरु के चरणों को रोज़ छूना,छोटों से प्यार बड़ों का आदर के साथ साथ प्रकृति की पूजा,पर्यावरण संरक्षण सब है।

जिस समय का साहित्य हम पढ़ते हैं वह अपने साथ उस समय की सामाजिक,राजनीतिकआर्थिक परिदृश्य लेकर आता है। साथ ही जन भाषा,आचार विचार ,परिस्थियाँ ,बौद्धिक चिंतन ,समस्या विषमता सब उजागर करता है लेकिन

हम बात कर रहे थे साहित्य की। भारतीय साहित्य में सच्चिदानंद की भावना है।

भारतीय साहित्य में इन सब के साथ, सामुदायिकता, सद्भावना, सद्बुद्धि की सरस्वती की अन्तरधारा प्रवाहित होती थी। चाहे हम वेद,उपनिषद की बात करें या जैन बौद्ध दर्शन की व्याख्या देखें।

धन्य हैं वे ऋषि मुनि जिन्होंने वसुधैव कुटुम्बकम की बात सिखाई। आज सामाजिक माध्यमों (सोशल मीडिया)सहअस्तित्व की बातें कम करते हैं भाषाई राजनीति बढ़ा रहे हैं । परिवार के दायरे को कम दिखाया जाता है। कुटुम्ब में बस हम चार की अवधारणा ज़्यादा दिखाई जाती है। बाक़ी रिश्तेदार और समाज वो तो दूर की बात। बहुधा इन माध्यमों में आधुनिकता के नाम पर अभद्रता और तुच्छता दिखाई जा रही है। स्वस्थ समाज की बजाय आपराधिक प्रवृतियों को दिखाया जाकर अपशब्द को रोजमर्रा की भाषा बनाने की प्रतियोगिता सी चल रही है जिसका दुष्प्रभाव सबसे अधिक युवाओं और बच्चों पर पड़ रहा है।

ये माध्यम भाषा के अलावा भी हमें प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से बहुत कुछ सिखाते हैं । अगर मैं अपने समय की बात करूँ तो उस समय जो अख़बार और पत्रिकाएँ थीं उन्होंने हमें सब्र रखना भी सिखाया। आप सभी को याद होगा धर्मयुग या समाचार पत्रों में बड़े उपन्यास या कहानियाँ किस्तों में आते थीं। और शेष अगले अंक मेंज बस इतना ही लिखा रहता था । हम उसे याद भी रखते थे। प्रतीक्षा भी करते थे। सामाजिक माध्यम प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से हमें प्रभावित करते हैं ।

भारत में एक समय में 19,500 से अधिक की बोलियाँ बोली जाती थी और 1650 से अधिक मातृभाषा ,2024 तक आते आते 453 जीवित भाषा हैं

आज एक लेखक चिंतक के रूप में कहूँगी जागरूक नागरिक के रूप में भी हमारा कर्तव्य है की टीवी, मोबाइल,नेटफ्लिक्स आदि के दुष्चक्रों से आज की पीढ़ी को ,भाषा और साहित्य को बचाने के प्रयास करने होंगे। स्वस्थ पठन और चिंतन की तरफ़ रुचि बढ़ानी होगी। हम घर पर ही एक तरह से चलित पुस्तकालय बना सकते हैं जिसमे आसानी से किताबों का आदान प्रदान हो। एक छोटी चाय बैठक या गोष्ठी हो सके। बगीचों में भी कोई किताब ले जाकर बच्चों को सुनाया जा सकता है। कहते हैं ना बच्चों को बोलकर या उपदेश से नहीं उनके सामने उदाहरण बनकर आचरण रख कर काम करें तो उसका गहरा प्रभाव पड़ता है। हम शुरुआत तो कर ही सकते हैं। बगीचों में अपनी किताब ले जायें। बच्चों को कविता छोटी कहानी सुनायें। उनसे हिंदी में संवाद करें पढ़कर सुनाने को कहें, लेखन के लिए प्रोत्साहित करें । मित्रों के साथ साहित्य का आनंद उठायें। निश्चित ही उसका फ़र्क़ देखने को मिलेगा।

हमारे प्रयासों में अभी कमी है, संचार माध्यमों में जागरूकता की कमी है।

हमारी पीढ़ी ने इसकी डोर आज तक थाम कर रखी है। आगे जो ज़ेन जी पीढ़ी है अब उसे सिखाने और समझाने की बारी है। अपनी भाषा हम समृद्ध नहीं बना रहे नए शब्द कहावतें आदि नहीं गढ़ रहे तो कम से कम उसके साथ तो दे सकते हैं।

विश्व में सबसे ज़्यादा बोलचाल की भाषा में हमारी हिंदी तीसरे पायदान पर आती है। हर देश की अपनी एक अलग भाषा है। हमें भी इसे राष्ट्र भाषा बनाना है। जब हम अपनी भाषा, संस्कृति परम्परा पर गर्व करेंगे तभी हमारी हिंदी पहले स्थान पर आएगी।

कला की क्षति है पद्मश्री श्याम बिहारी अग्रवाल का अवसान

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

वाश पद्धति के मौजूदा कलाकारों में अग्रिम पंक्ति में खड़े होने वाले एवं वॉश पद्धति को आगे लाने हेतु हमेशा सक्रिय रहने वाले कलाकार डॉ. श्याम बिहारी अग्रवाल ने 1 सितंबर को अपना 83वाँ जन्मदिवस मनाया था। वे भविष्य में कला के तमाम कार्यक्रमों, योजनाओं को लेकर उत्साहित भी थे। शुभकामनाओं का दौर छिटपुट तरीके से चल ही रहा था कि 6 सितंबरको हृदयगति रुकने की वजह से डॉ. अग्रवाल का प्रयागराज में निधन हो गया। कला जगत के लिए यह क्षति कभी न भरने वाले घाव सा हो गया है।

कला के क्षेत्र में पद्मश्री सम्मान से सम्मानित डॉ. अग्रवाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आज चर्चा करने का विचार है। उम्र के ऐसे पड़ाव पर जब कि आराम की दरकार होती है, कुछ नया कर पाना थोड़ा मुश्किल होता है, कहीं भी निकल पाना, किसी कार्यक्रम में शिरकत कर पाना और भी मुश्किल हो जाता है पर ऐसी अवस्था में भी कलाकार, कला गुरु डॉ. श्याम बिहारी अग्रवाल की सक्रियता देखकर नतमस्तक हो जाने को जी चाहता है। घंटों अपने स्टूडियो में रंगों-रेखाओं के साथ मगन रहने वाले श्याम बिहारी जी कला के किसी भी विषय पर बड़े ही सहज अंदाज में समझाते थे और हंसते हुए अपने सृजनशीलता पर चर्चा भी करते थे। बारीक बिल्कुल बारीक रेखाओं के साथ ही कला पर बारीक-बारीक बातों पर ध्यान देते हुए कई पुस्तकें और आलेख भी आपने लिखा है वहीं बड़े-बड़े स्ट्रोक्स भी हैं आपके कृतियों और जीवन में भी। मिलनसार व्यक्तित्व, बिल्कुल बच्चों सा हंसता-खिलखिलाता चेहरा, संत स्वभाव अग्रवाल जी हमेशा कला के क्षेत्र में, कला के भले हेतु, कुछ न कुछ करने की सोच ही रहे होते थे। रूप शिल्प संस्थान के माध्यम से भी आप निरंतर, कला में आने वाले नये एवं पुराने लोगों के लिए अच्छा कार्य किया। प्रयागराज में आधुनिक कला दीर्घा खोलने का भी आपका विचार था।

गाड़ी करीब घंटे भर विलंब से पंहुच रही थी। स्टेशन पर पहले से ही, कला पर रचनाओं की एक से बढ़कर एक पुस्तकें देने वाले प्रबुद्ध कला समीक्षक राकेश गोस्वामी जी इंतजार कर रहे थे जबकि उनकी तबियत इसकी इजाज़त नहीं दे रही थी, कोई और होता तो आराम को तवज्जो देता पर गोस्वामी जी का प्यार उनके बड़प्पन को दिखाता है। उन्हीं के सौजन्य से कलागुरु से मिलना संभव हो सका था। ऐसी अवस्था में लगातार काम करना, कम्प्यूटर पर भी लगातार बने रहना कलाकार डॉ. श्याम बिहारी अग्रवाल के दैनिक चर्या में शामिल था। लेखन, चित्र निर्मिती लगातार जारी थी। निरंतर तल्लीन होकर रचना कर्म में लगे रहने का परिणाम यह था कि उनके पास से हमेशा कुछ न कुछ नया जरूर प्राप्त हो जाता था। मुलाकात बहुत ही छोटी रही जिसमें सबकुछ समेट पाना मुश्किल था फिर भी बहुत कुछ हासिल हो गया। गंगा किनारे, नहावन पर्व के समय, जब कि भीड़ से पाढ़ पाना आसान नहीं होता हम सभी साथ घूम रहे थे और निरंतर कला के संवाद में व्यस्त भी थे। तमाम चर्चाओं, खान-पान और घूम चुकने के बाद शास्त्री पुल, चुंगी, दारागंज घूमते हुए वापस उनके घर आया गया। कार में भी काफी चर्चा हुई। उनके द्वारा बहते एक-एक शब्दों को समेट लेना चाह रहे थे हम लोग। तब नहीं पता था कि ये मुलाकात शायद आखिरी होगी। घर पर जो स्टूडियो भी था और बढ़िया तरीके से संवाद स्थापित किए गए। रचना प्रक्रिया को समझा गया।

बंगाल स्कूल से कला में भारतीयता को लेकर जो वीणा उठाया गया था, कृतियों में सहजता, सौम्यता, शालीनता को लेकर अवनींद्रनाथ टैगोर से क्षितींद्र नाथ मजूमदार तक की जो यात्रा रही है, विषय में भारतीयता की जो सुगंध रही है, रेखा और रंग की कोमलता और मोहित कर लेने वाली जो शक्ति रही है, जिस पद्धति को हम वाश पद्धति के नाम से जानते हैं ऐसी पद्धति जो अब धीरे-धीरे जैसे कहीं खोती सी जा रही है, निराश भी करती है पर इन सभी के बीच खुश हो लेने वाली जो बात थी वो सरल, सहज, शालीन स्वभाव वाले कलाकार क्षितींद्र नाथ मजूमदार के परम शिष्य डॉ. श्याम बिहारी अग्रवाल के कृतियों को देखने से थी जहाँ ग्रामीण परिवेश अपने सादगी के साथ है, जहाँ हर लुप्त होती वस्तुओं को कृतियों में बचा लेने की कुव्वत है, जहाँ प्रेम है, विरह है, मेघदूत से संदेशा पहुँचाने का प्रकरण है, शकुंतला जैसे पात्रों का अंकन है तो सुखी परिवार, गुरू-शिष्य परंपरा भी है, जहाँ संस्कार है तो प्राचीन शैलियों पर आधारित छात्रों के अध्ययन हेतु कलाकृतियाँ भी हैं। दीपक जलता रहा रात भर, आराम करते मजदूर, मेले से वापसी, गपशप सभी कृतियाँ जल रंग (वाश पद्धति) में हैं और सभी में भारत की संस्कृति, अपनापन, जीवंतता

बनी हुई है। कोमल रंग, लोचदार एवं लंबी-लंबी आकृतियाँ इनकी पहचान बन गई है।

कृति %सरस्वती% में देवी सरस्वती को इतने सहज अंदाज में उकेरा गया है कि देखते ही बनता है। अधखुले नैन, सौम्य मुस्कान, पुष्प का कुंडल, वीणा बजाती लंबी उंगलियाँ, जल में खिले कमल के बीच बारीक रेखाओं का अंकन वाश पद्धति की विशेषता बखूबी प्रदर्शित है। वाश पद्धति जहाँ कृति को बार-बार धुल कर विशेष प्रभाव उत्पन्न करने की बात होती है, पर कलाकार की सिद्धहस्तता जग जाहिर है। 'कार्यरत लोहार' में ग्रामीण परिवेश, क्रियात्मक भाव भंगिमा आदि मजबूती के साथ है पर कुछ है जो थोड़ा सा खटकता है वहीं दूसरे कृति 'सोहर' में ढोल-मंजीरे के थाप के साथ गूंजते गीत की अनुभूति हो रही है, श्रोता रूपी कुछ मानव आकृतियाँ और होने चाहिए थे खैर ये तो अपने विचार हैं। उनकी कृतियाँ संबंधों पर भी बात करतीं हैं। गुरु-शिष्य (टेंपरा) इसी को परिभाषित करती है। कृति में प्राचीन शिक्षा पद्धति श्याम-स्वेत चित्र, जो वर्णनात्मक शैली में हैं, को गजब के ताजगी के साथ दिखाया गया है। मुख, भाव-भंगिमा आदि का आपसी सामंजस्य जबरदस्त है। मेघदूत पर आधारित आपकी कई कृतियाँ है, एक कृति जिसमें संभवतः शकुंतला है, अंकन इतना बेजोड़ हुआ है कि सभी कृतियों पर भारी है। लहरदार वस्त्र, केश, बादल, हाथ में लहरदार पुष्प, श्याम-श्वेत रंगों का सधा संयोजन आपके सौंदर्य दृष्टि की परिचायक है। जल रंग, तैल रंग, मिक्स मीडिया, मूर्ति जैसे कई माध्यमों में आपकी सक्रियता देखते बनती है। आधुनिक कलाकृतियों पर भी आपने काम किया था।

मजूमदार जी के कहने पर आप गवर्नमेंट कालेज ऑफ़ आर्ट एंड क्राफ्ट कलकत्ता से शिक्षा के बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय में लेक्चरर के पद पर ज्वाइन किए जहाँ कला को लेकर निरंतर गतिविधियाँ होती रहीं। प्रयाग संगीत समिति तथा इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ जैसे संस्थानों से भी आपका जुड़ाव रहा।

राज्य ललित कला अकादमी, लखनऊ से जुड़ाव, अकादमी से प्रकाशित 'कला त्रैमासिक' का सम्पादन

सहित मजूमदार के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर पुस्तक लिखने के साथ ही अनेक कला कार्यशालाओ एवं प्रदर्शनियों का सफल संचालन भी आपके नाम थे। विभिन्न विश्वविद्यालयों के साथ अन्य जगहों पर आपकी प्रदर्शनी, वक्तव्य, प्रदर्शन का भी वर्णन है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कला समीक्षा के साथ ही आपकी तमाम पुस्तकें प्रकाशित हैं। कलाकार डॉ. श्याम बिहारी अग्रवाल जी का जन्म 01 सितंबर 1942 को सिरसा, प्रयागराज में एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था, इनके पिता स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री कृष्ण जी रहे। बचपन से ही कलाकार बनने के गुण आपमें नजर आने लगे थे जो प्रयाग से प्रकाशित अखबारों के पन्नों पर पूरे प्रयाग वासियों को दिखने लगे थे। कार्टून, रेखाचित्र, अभिनय सहित जो भी विशेषताएं आपको अपने अंदर दिखीं आप सभी पर काम किए पर उसमें से चित्रकला को ज्यादा तवज्जो मिला और चित्रकला ने आपको तवज्जो देते हुए पद्मश्री तक के सफर तक पहुंचा दिया भविष्य में अभी और की भी उम्मीद थी पर अब कहाँ संभव है? कलाकार बनने हेतु आपको भी पारिवारिक जद्दोजहद का सामना करना पड़ा था पर ख्वाब के प्राप्ति हेतु ख्वाबों के ख्वाब पर चलकर आप आज यहाँ थे।

अग्रवाल जी लगातार कला संबंधी आलेख लिखते रहे जिसका प्रकाशन समकालीन कला, रूप शिल्प, कला त्रैमासिक, सुंदरम, कलादीर्घा सहित अन्य पत्र पत्रिकाओं में होता रहा है। श्रद्धा, प्रतीक्षा, उन्मादनी, लहर एवं चांद, श्याम तेरी मुरली ना बजाऊं, विरहणी, मौन संगीत आदि आपकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। डॉक्टर अग्रवाल जी कागज की जगह कैनवास पर एक्रेलिक रंगों से वॉश पेंटिंग का प्रभाव उत्पन्न करने का भी साहस किए हैं। उनके चित्रों की प्रदर्शनी इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, कोलकाता के महाजातीय सदन, इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट, राज्य ललित कला अकादमी लखनऊ आदि जगहों पर हुई हैं। आपको 1965 में कोलकाता की वार्षिक प्रदर्शनी में श्रेष्ठ भारतीय चित्र का इंदुरचित अवार्ड भी प्राप्त हुआ है। 2019 में राज्य ललित कला अकादमी लखनऊ का कला गौरव सम्मान भी प्राप्त हो चुका है।

पूर्वजों की तृप्ति और श्रद्धा का सर्वोच्च पर्व

सर्व पितृ अमावस्या पर विशेष

श्वेता गोयल

लेखक शिक्षक हैं।

यह भाद्रपद पूर्णिमा से आश्विन अमावस्या तक चलता है और इसकी अंतिम तिथि को 'सर्व पितृ अमावस्या' कहा जाता है। यह तिथि केवल एक दिन नहीं बल्कि श्रद्धा और कृतज्ञता का पर्व है। इस दिन उन सभी पितरों का स्मरण और श्राद्ध किया जाता है, जिनकी पुण्यतिथि ज्ञात नहीं है या किसी कारणवश पितृ पक्ष में उनके लिए श्राद्ध नहीं किया जा सका। यही कारण है कि इसे पितरों को प्रसन्न करने का आखिरी अवसर माना जाता है। सर्व पितृ अमावस्या 21 सितंबर को है। अमावस्या तिथि का प्रारंभ 20 सितंबर की रात 12 बजकर 17 मिनट पर होगा और समाप्ति 21 सितंबर की रात 1 बजकर 24 मिनट पर होगी। इस प्रकार पूरे दिन श्राद्ध, तर्पण और पिंडदान के लिए पुण्यकाल उपलब्ध रहेगा। इस दिन का महत्व इतना गहरा है कि यह उन सभी परिवारों के लिए विशेष अवसर लेकर आता है, जिनके पास पूर्वजों की मृत्यु तिथि की सही जानकारी नहीं है या जो किसी कारणवश निर्धारित दिन पर श्राद्ध नहीं कर पाए।

भारतीय संस्कृति में पितरों का स्थान देवताओं से भी पहले माना गया है। हमारे शास्त्रों में कहा गया है, 'मातृदेवो भव, पितृदेवो भव' अर्थात माता-पिता और पूर्वज देवतुल्य हैं और उनके बिना किसी परिवार, वंश या समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। इसी कारण से भारतीय परंपरा में एक विशेष कालखंड पितरों को समर्पित किया गया है, जिसे पितृ पक्ष कहा जाता है। यह भाद्रपद पूर्णिमा से आश्विन अमावस्या तक चलता है और इसकी अंतिम तिथि को 'सर्व पितृ अमावस्या' कहा जाता है। यह तिथि केवल एक दिन नहीं बल्कि श्रद्धा और कृतज्ञता का पर्व है। इस दिन उन

सभी पितरों का स्मरण और श्राद्ध किया जाता है, जिनकी पुण्यतिथि ज्ञात नहीं है या किसी कारणवश पितृ पक्ष में उनके लिए श्राद्ध नहीं किया जा सका। यही कारण है कि इसे पितरों को प्रसन्न करने का आखिरी अवसर माना जाता है। सर्व पितृ अमावस्या 21 सितंबर को है। अमावस्या तिथि का प्रारंभ 20 सितंबर की रात 12 बजकर 17 मिनट पर होगा और समाप्ति 21 सितंबर की रात 1 बजकर 24 मिनट पर होगी। इस प्रकार पूरे दिन श्राद्ध, तर्पण और पिंडदान के लिए पुण्यकाल उपलब्ध रहेगा। इस दिन का महत्व इतना गहरा है कि यह उन सभी परिवारों के लिए विशेष अवसर लेकर आता है, जिनके पास पूर्वजों की मृत्यु तिथि की सही जानकारी नहीं है या जो किसी कारणवश निर्धारित दिन पर श्राद्ध नहीं कर पाए।

पितृ दोष के निवारण के लिए भी यह दिन अत्यंत प्रभावी माना गया है। इस दिन पवित्र नदियों, विशेषकर गंगा में तर्पण करना, अनाथ और जरूरतमंदों को भोजन कराना, गरीबों को वस्त्र और दान देना, गाय को चारा या फल खिलाना, तुलसी का पौधा लगाना और उसकी नियमित पूजा करना, पितरों की शांति हेतु हवन और मंत्रजाप कराना तथा पक्षियों को अन्न अर्पित करना श्रेष्ठ उपाय बताए गए हैं। माना जाता है कि इन उपायों से पितृ दोष शांत होता है और पितरों की कृपा वंशजों पर बनी रहती है।

सर्व पितृ अमावस्या का महत्व केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं है बल्कि इसका सामाजिक और आध्यात्मिक पक्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है। यह दिन हमें स्मरण कराता है कि हमारा अस्तित्व हमारे पूर्वजों के कारण ही संभव है। उनके त्याग, परिश्रम और संस्कारों ने ही हमें वह आधार दिया है, जिस पर आज हमारा जीवन टिका है। इस दिन जब पूरा परिवार एकत्र होकर पितरों का स्मरण करता है तो परिवार में एकजुटता और परंपरा का संरक्षण होता है। समाजशास्त्रियों का मानना है कि श्राद्ध केवल धार्मिक आस्था नहीं बल्कि पूर्वजों की स्मृति का सामाजिक आयोजन भी है, जिसमें अतीत और वर्तमान का सेतु जुड़ता है। आधुनिक जीवनशैली और व्यस्त दिनचर्या के कारण आज की पीढ़ी परंपराओं से दूर होती जा रही है। कई लोग श्राद्ध और तर्पण को केवल एक कर्मकांड मानते हैं। लेकिन यदि इसे गहराई से समझा जाए तो यह केवल धार्मिक कर्त्तव्य नहीं बल्कि आभार व्यक्त करने का उत्सव है। आज जब समाज में कृतज्ञता और मानवीय मूल्यों की कमी महसूस की जाती है, तब यह पर्व हमें सिखाता है कि पूर्वजों को याद करना, उनका सम्मान करना और उनके बताए मार्ग पर चलना कितना आवश्यक है। बच्चों को परंपराओं से जोड़ना और उन्हें यह बताना कि वंश की जड़ें ही हमारी असली ताकत हैं, इस दिन का एक बड़ा संदेश है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी पितृ पक्ष का महत्व स्वीकार किया गया है। विद्वानों का मानना है कि अमावस्या का समय आत्मीय ऊर्जा के प्रवाह का विशेष काल होता है। जब वंशज श्रद्धा और समर्पण से पितरों को स्मरण करते हैं तो उनकी स्मृति से सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, जिससे परिवार और समाज पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि पितृ पक्ष में उपवास, दान और संयम को विशेष महत्व दिया गया है। इस प्रकार सर्व पितृ अमावस्या केवल एक तिथि नहीं बल्कि पूर्वजों के प्रति आभार और श्रद्धा व्यक्त करने का सर्वोच्च पर्व है। इस दिन किए गए श्राद्ध, तर्पण, पिंडदान और दान के माध्यम से हम अपने पूर्वजों को तृप्त कर सकते हैं और उनके आशीर्वाद से अपने जीवन को सुखमय बना सकते हैं। भारतीय संस्कृति की यह परंपरा हमें यह संदेश देती है कि मनुष्य केवल अपने लिए नहीं जीता बल्कि वह अपने पूर्वजों और आने वाली पीढ़ियों से जुड़ा होता है। इस दिन किया गया छोटा-सा कर्म भी न केवल पितरों की आत्मा को शांति देता है बल्कि परिवार और समाज के लिए सकारात्मक ऊर्जा का स्रोत बनता है।

अब हर शो बिग बॉस तों नहीं होता

रियल्टी शो की समीक्षा

आदित्य दुबे,

लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

सॉ राइज़ एण्ड फॉल में असल ज़िन्दगी की झलकियाँ कम लग रही हैं और कुछ इसे शक्ति और स्थिति के आसपास सुना गया रियल्टी शो मानते हैं ।इस शो को दो ग्रुप में बांटा गया है - पेंटहाउस में रहने वाले रूलर्स और बेसमेंट में काम करने वाले वर्कर्स । यह अन्दाज़ दर्शकों को पसन्द आ रहा है। दर्शकों की मिली-जुली प्रतिक्रिया रही है । कुछ दर्शक शो के शासक (रुलर) और कामगार (वर्कर्स) वाले कथानक से प्रभावित हैं तो कुछ दर्शकों को इस शो के मेज़बान (होस्ट) अशनीर ग्रोवर का प्रस्तुतीकरण बहुत अच्छा लग रहा है ।वहीं कुछ लोगों को मानना है कि कथ्य के नज़रिये से ' बिग बॉस ' में जो भावनात्मक जुड़ाव और असल ज़िन्दगी का बिम्ब हैं ,वो मन को छू लेने का सामर्थ्य रखता है वो इस रियल्टी शो में नहीं है । अब इन दर्शकों को कौन समझाये कि हर शो ' बिग बॉस ' तो नहीं होता है ?

यह प्रीमियर रियल्टी शो इसी माह छः सितम्बर को प्राइम वीडियो पर प्रदर्शित हुआ है। अशनीर ग्रोवर जो इस शो के

उद्यमी अशनीर ग्रोवर का बेबाक और सीधा होस्टिंग अंदाज़ भी शो को और आकर्षक बना रहा है.। यह रियलिटी शो वस्तुत एक नया सामाजिक प्रयोग है ,जो 16 सेलेब्रिटी प्रतियोगियों को श्रेष्ठता वाले सामाजिक पदानुक्रम में रखता है, इसी प्राइम वीडियो पर दिखाया जा रहा है, जिसके प्रमोटर अशनीर ग्रोवर हैं। शो का। अन्दाज़ अच्छा माना जा रहा है, और लोगों को इसका नया प्रयोग पसन्द भी आ रहा है, हालांकि इसमें भोजपुरी सुपरस्टार पवन सिंह जैसे कुछ कंटेस्टेंट ने बाद में शो छोड़ भी दिया है जो समझ से परे माना ज रहा है ।

न फिल्म ,न वेबसिरीज़ , इस बार समीक्षा हो जाये एक रियल्टी शो की । इस बार बात हो रही है रियल्टी शो - ' राइज एंड फॉल ' की । शो का यदि हम हिन्दी अनुवाद करें तो यह तथा कथा है उत्थान और पतन की । इस रियल्टी शो के बारे में प्रमोटर हैं, वे शो के दौरान ' बिग बॉस ' पर कटाक्ष भी करते हैं जिससे उन्हें बचना चाहिये । यह सच है कि इसमें पवन सिंह जैसे कुछ बड़े नाम शामिल हैं, हालांकि पवन सिंह, जो शो में अपनी पावर खो बैठे थे और संगीता फोगाट जो फैमिली इमरजेंसी के कारण शो से बाहर हुई थीं उससे शो की पकड़ कमजोर हुई है , इतना ही नहीं शो के पहले ही हफ्तों में पवन सिंह से उनकी खास पावर छिनना और एक एविक्शन राउण्ड में नूरिन शाह को एलिमिनेट कर दिया जाना शॉकिंग कहा जायेगा ।शो का कॉन्सेप्ट लोगों को पसंद आ रहा है, और कई लोगों को यह बिग बॉस से बेहतर लग रहा है। मगर इसकी बिग बॉस से तुलना बेमानी है क्योंकि उसने कड़ी मशक्कत से अपना अलग स्थान और बड़ा दर्शक वर्ग बनाया है ।

सेवा पखवाड़ा अभियान के तहत रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया

विधायक नीना वर्मा, भाजपा जिलाध्यक्ष ने रक्तदाताओं को किया प्रमाण पत्रों का वितरण

धार। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के 75वें जन्मदिवस 17 सितंबर से 2 अक्टूबर गांधी जयंती तक चलने वाले विशेष सेवा पखवाड़े में आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में भाजपा सेनापति नगर मंडल व युवा मोर्चा ने विशेष रक्तदान शिविर का आयोजन शनिवार को भाजपा जिला कार्यालय पर किया गया । जिसमे मुख्य रूप से अतिथि भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती विधायक नीना वर्मा उपस्थित रहकर रक्तदाताओं को प्रमाण पत्रों का वितरण किया गया ।

इस दौरान भाजपा केसरीमल सेनापति नगर मंडल अध्यक्ष विशाल निगम भारतीय जनता युवा मोर्चा जिला महामंत्री अंकित भावसार भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा अभियान जिला संयोजक देवेंद्र सोनोने पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष ममता जोशी विशेष रूप से मौजूद रहें। ब्लड बैंक की टीम द्वारा समस्त रक्तदाताओं का रक्त परीक्षण कर रक्तदाताओं से रक्त संग्रहण किया गया।

जिलाध्यक्ष महंत भारती ने कहा कि रक्तदान करना किसी को जीवनदान देने के तुल्य होता है। आपका दिया हुआ यह रक्त किसी के जीवन की रक्षा हेतु उपयोग होगा और इससे बड़ा पुण्य और कोई भी नहीं है। प्रधानमंत्री मोदी जी का जीवन देश और जनसेवा को समर्पित है उनको प्रेरक के केंद्रबिंदु पर रख कर आप सब इस पुनीत कार्य में सहभागी बने हैं ये अपने आप मे ऐतिहासिक है।

इन्होंने किया रक्तदान- पीजी कॉलेज जन भागीदारी समिति अध्यक्ष दीपक बिड़कर गौरव जाट अंकित भावसार सोनु रघुवंशी संजय मकवाना राहुल राजपूत राकेश दुर्गेश्वर कुलदीप पंकज गोपाल वर्मा सहित अन्य युवा मोर्चा कार्यकर्ता ने रक्तदान किया।

इस अवसर पर मंडल महामंत्री अमित शर्मा ,सीमा सोनी ,युवा मोर्चा जिला मंत्री लव प्रजापति ,पार्षद रंजना राठौर ,राखी राय , पुरषोत्तम चौहान जीवन यादव बादल मालवीय सोनिया राठौर देवेंद्र रावल शैलेन्द्र चौरसिया राजेश कुमावत समेत भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे।

भारतीय मातृभाषा अनुष्ठान में महाकाव्य 'महात्मा चरित काव्यांजलि' का लोकार्पण

धार। हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी के द्वारा भारतीय मातृभाषा अनुष्ठान का ऐतिहासिक आयोजन रवींद्र भवन भोपाल में सम्पन्न हुआ । साहित्य के इस महाकुंभ में राष्ट्रीय ओज कवि यशवंत चौहान के महाकाव्य महात्मा चरित काव्यांजलि का भव्य लोकार्पण भी हुआ । लोकार्पण साहित्य अकादमी के यशश्वी निदेशक विकास दवे के कर कमलों के द्वारा हुआ । लोकार्पण समारोह में देश के अनेक नामचीन साहित्यकार मौजूद थे । इस अवसर पर उन्होंने इस महाकाव्य की पृष्ठभूमि एवं प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला । महाकाव्य ÷महात्मा चरित काव्यांजलि÷ में न केवल इतिहास व साहित्य का समन्वय है अपितु इसमें मानवता, विश्व बंधुत्व, जाति, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा, संस्कृति एवं मानवीय सभ्यता के समन्वय की विराट चेष्टा है । इस कृति में राष्ट्रीय आंदोलन की अनेक घटनाओं को छंद विधान में लिखा गया है । इस कृति में कुल 12 सर्ग है । जिसमें गांधीजी का साद्यन्त जीवन एवं जीवन दर्शन समाहित है । छंद विधान में लिखे गए इस महाकाव्य में दोहा, चौपाई एवं मनहरण घनाक्षरी का त्रिवेणी संगम है । प्रत्येक सर्ग का प्रारंभ मनहरण घनाक्षरी एवं दोहे के साथ किया गया है।

एनसीसी कैडेट्स ने शहीद स्मारक पर चलाया स्वच्छता अभियान

बैतूल। स्वच्छता सेवा पखवाड़े के अंतर्गत विभिन्न शासकीय अशासकीय एवं सामाजिक संगठनों द्वारा विगत दिनों से स्वच्छता संबंधी कई आयोजन कराये जा रहे है। इसी कड़ी में उत्कृष्ट विद्यालय के एनसीसी कैडेट्स ने देश के लिए शहीद हुए वीर जवानों की याद में बने शहीद स्मारक की साफ सफाई कर स्वच्छता का संदेश दिया। विगत 17 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक चलाये जा रहे। इस स्वच्छता अभियान के अंतर्गत डीजी एनसीसी व 13 मप्र बटालियन नर्मदापुरम के कमान अधिकारी कर्नल सत्य प्रकाश सिंह के निर्देशानुसार व प्राचार्य सत्येंद्र उदयपुरे के मार्गदर्शन में कैडेट्स द्वारा इस सेवा अभियान में सहभागिता दी गयी। संस्था के एनसीसी ऑफिसर ओम द्विवेदी ने बताया कि स्वच्छता सेवा पखवाड़ा में कैडेट्स द्वारा देश के अमर शहीदों की स्मृति

में बने शहीद स्मारक व उसके परिसर की साफ सफाई करते हुए स्वच्छता के प्रति जागरूकता का संदेश दिया। स्वच्छता सेवा कार्य की शुरुआत राष्ट्रीय गान से की गई। जिसके बाद एनसीसी कैडेट्स ने छोटी छोटी टुकडियों में योजनाबद्ध तरीके से स्मारक की सफाई कर उस पर तिरंगा झंडा लगाया। साथ ही परिसर में बिखरी प्लास्टिक, क्षतिग्रस्त तोरण, कचरा व उपयोग की गई पानी की बोतले को एकत्रित कर परिसर में लगे डस्टबिन में उचित निस्तारण हेतु रखा। लगभग 45 मिनट चले इस स्वच्छता कार्य में एनसीसी के प्रथम एवं द्वितीय वर्ष कैडेट्स के साथ विद्यालय के अन्य छात्र भी सम्मिलित हुए। सेवा कार्य की समाप्ति पर कैडेट्स द्वारा शहीदों के सम्मान में देशभक्ति नारे लगाए गए। कार्यक्रम के अंत में संस्था के एनसीसी ऑफिसर ने स्वच्छता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए वर्तमान समय मे स्वच्छता की आवश्यकता के लिए संकल्प दिलाया। ज्ञात हो कि एनसीसी इकाई द्वारा सेवा पखवाड़े के शेष दिनों में भी स्वच्छता संबंधित अन्य गतिविधियां कराई जाएगी।

स्व. देवीप्रसाद जी व्यास की श्रद्धांजलि कल

बैतूल। वर्तमान में चंद्रशेखर वार्ड सदर निवासी शिक्षा विभाग में प्राचार्य के पद से सेवानिवृत्त पं. देवीप्रसादजी व्यास का गत 10 सितंबर 25 को देवलोकगमन हो गया था। जिनकी त्रयोदशाकर्म,

गंगापूजन, पगड़ी एवं श्रद्धांजलि कार्यक्रम कल 22 सितंबर सोमवार को प्रात- 11.30 बजे से देवाशीष गार्डन, भीलाखेड़ी डोलरिया रोड मेहरागांव इटारसी में रखा गया है। स्व. देवीप्रसाद व्यास के भाइयों, सुपुत्रो सहित अन्य परिजनों ने सभी इष्टजनों एवं परिवारजनों से श्रद्धांजलि सभा में आकर दिवंगत आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना करने आग्रह किया है। उल्लेखनीय है कि पं. देवीप्रसाद जी का जन्म नर्मदापुरम के प्रतिष्ठित व्यास परिवार के श्रीमती गुलाबबाई- श्री नारायणजी के यहाँ 15 नवंबर 1938 को ग्राम भीलाखोड़ी में हुआ था। ग्राम के सभी छोटे-बड़े लोग सम्मानपूर्वक उन्हें दादा नाम से सम्बोधित करते है। दादा अपने परिवार में सबसे बड़े पुत्र थे, उनके तीन भाई रामकिशोर, संतोष, नरेन्द्र तथा चार सुपुत्र जिनमे राजेश, संजय, मुकेश व पंकज तथा दो पुत्रीयाँ माया एवं छाया सहित चार पुत्रवधु नाती-पोतो वाले भरापूरा परिवार के वे प्रमुख थे। सहज, सरल स्वभाव के धनी दादा एक आदर्श शिक्षक, पिता एवं भाई रहे, जिनका सभी बडा सम्मान करते थे और पूरे गाँव, समाज और परिवार में उनका एक विशेष स्थान रहा।

बकायेदारों की सूची तैयार कर रही नपा, की जाएगी चस्पा

शहरवासियों पर जलकर का करीब 3.63 करोड़ बकाया

बैतूल। नगरपालिका वित्तीय संकट से जूझ रही है। हालात यह है कि वित्तीय संकट के कारण नपा के कर्मचारियों का वेतन भुगतान भी समय पर नहीं हो पा रहा है। जिसके पीछे सबसे बड़ा कारण शहरवासियों पर बकाया 3 करोड़ 63 लाख 83 हजार 621 रुपए का जलकर है, जिसकी वसूली अब तक नहीं हो सकी। यहीं वजह है कि कर्मचारियों को समय पर वेतन देने के लिए भी नगर पालिका को राजस्व के नए स्त्रोत तलाशने पड़ रहे हैं। बता दे कि नगरपालिका की शहर में पेयजल सप्लाई व्यवस्था है और नपा के रिकॉर्ड में 13500 लोगों ने नल कनेक्शन ले रखे है। जिनसे नगरपालिका जलकर के रूप में 120 रुपये आवासीय और 600 रूपये प्रतिमाह व्यवसायिक नल कनेक्शनों से टैक्स लेती है। लेकिन लोग जलकर का टैक्स समय पर जमा नहीं कर रहे है। नगरपालिका का राजस्व अमला भी करों की वसूली के लिए सख्त नहीं है। जलकर का भुगतान न करने वालों के नल कनेक्शन काटे जा रहे है और न ही सख्त कार्यवाही की जा रही है। जिससे लोग भी जलकर भुगतान को लेकर लापरवाह बने हुए है। यहीं वजह है कि नगरपालिका आर्थिक संकट से जूझ रही है।

लोक अदालत में करीब 70 लाख वसूली

सितंबर में आयोजित लोक अदालत से नपा को करीब 70 लाख रुपए की राहत जरूर मिली। जिसमें से नपा ने लगभग 6 लाख 90 हजार रुपये जलकर का ही वसूल किया, लेकिन अब अक्टूबर में वेतन भुगतान को लेकर नगरपालिका की चिंता बढ़ गई है। अक्टूबर में दशहरा और दीपावली जैसे दो बड़े त्यौहार है। ऐसे में वसूली कम होती है तो फिर वेतन पर संकट खड़ा होने के आसार हैं। यही वजह है कि अब नगर पालिका ने बकाया वसूली के लिए सख्ती से अभियान चलाने का निर्णय लिया है। नगर पालिका ने शहर को चार जोनों में बांटा है और प्रत्येक जोन में छह-छह कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई है। जिन्हें डोर-टू-डोर दस्तक देकर बकाया जलशुल्क की वसूली के निर्देश दिये है।

खर्च और आय में भारी अंतर

नगर पालिका हर साल पेयजल सप्लाई और मेंटेनेंस पर 2 से 3 करोड़ रुपए तक खर्च कर रही है, लेकिन जलकर की वसूली ठीक से न होने के कारण उस पर वित्तीय बोझ बढ़ता जा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि समय पर वसूली की जाती तो नगर पालिका की यह स्थिति नहीं बनती। इधर शहरवासी नगर पालिका की कार्यप्रणाली पर सवाल उठा रहे हैं। उपभोक्ताओं का कहना है कि जब उनसे प्रतिमाह 120 रुपए जलशुल्क वसूला जा रहा है तो फिर पानी की सप्लाई भी नियमित दी जानी चाहिए। सामान्य दिनों में एक दिन छोडकर पानी मिलता है। गर्मियों में यह अंतराल बढ़ाकर दो दिन कर दिया जाता है। लोगों का कहना है कि जब शुल्क पूरी तरह वसूला जा रहा है तो फिर आधी सप्लाई देना उपभोक्ताओं के साथ अन्याय है।

राजस्व वसूली पर नपा का पूरा ध्यान

नगरपालिका द्वारा अब बकायादारों से राशि वसूली की तैयारी की जा रही है। सूची तैयार की जा रही है और नोटिस जारी किये जा रहे है। राजस्व अमले का दावा है कि इस बार वसूली अभियान में कोई ढिलाई नहीं बरती जाएगी। बता दे कि अमृत 1.0 के तहत करीब 10 हजार नल कनेक्शन जारी किए गए थे। इनमें से लगभग 4500 उपभोक्ताओं पर प्रति कनेक्शन 5800 रुपए के हिसाब से करीब 2.61 करोड़ रुपए बकाया है। कुछ ने कनेक्शन कटने के डर से शुल्क तो जमा कराया, लेकिन बड़ी संख्या में उपभोक्ता अब भी राशि नहीं दे पाए हैं। वहीं नगर पालिका ने अमृत 2.0 योजना के तहत भी 2 हजार से अधिक नल कनेक्शन कर दिए हैं। हालांकि कनेक्शन चालू नहीं होने के कारण इन्हें फिलहाल राजस्व वसूली से अलग रखा गया है,।

इनका कहना है -

जिन लोगों पर जलकर की राशि बकाया है, उनकी सूची तैयार की जा रही है। इस सूची का फ्लेक्स बनाकर चस्पा किया जायेगा। जिनके अवैध नल कनेक्शन है और वह वैध नहीं कराते है तो उनके नाम भी चस्पा कर पेनाल्टी लगाने की कार्यवाही की जायेगी।

- सतीश मटसेनिया,
सीएमओ, नगरपालिका बैतूल

वीरांगना रानी दुर्गावती शासकीय कन्या महाविद्यालय में हुआ एक दिवसीय करियर अवसर मेले का आयोजन

बैतूल। स्वामी विवेकानंद करियर मार्गदर्शन योजना, मध्य प्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग, भोपाल के निर्देशानुसार वीरांगना रानी दुर्गावती शासकीय कन्या महाविद्यालय, बैतूल में 20 सितम्बर को प्रातः 11 बजे से एक दिवसीय करियर अवसर मेले का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. विद्या चौधरी, मुख्य अतिथि पूर्व प्राचार्य प्रो. उषा द्विवेदी, विशेष अतिथि जिला चिकित्सालय बैतूल के सीएचएमओ डॉ. परिहार, जनभागीदारी समिति की सदस्य श्रीमती सीता शुक्ला, आईक्यूएसी समन्वयक डॉ.आशीष गुप्ता और कार्यक्रम की संयोजक श्रीमती माधुरी पल्ले ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित एवं माल्यार्पण कर किया। अतिथियों का स्वागत पुष्पगुच्छ से किया। कार्यक्रम की संक्षिप्त रूपरेखा स्वामी

विवेकानंद करियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ की प्रभारी श्रीमती माधुरी पल्ले ने प्रस्तुत की। पूर्व प्राचार्य प्रो. उषा द्विवेदी ने छात्राओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनने और स्वयं को उद्यमी के रूप में स्थापित करने के लिए प्रेरित किया। सीएचएमओ डॉ. परिहार ने कहा कि महिलाएं आज पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर समाज में सकारात्मक बदलाव ला रही हैं और करियर मेला छात्राओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराएगा। जनभागीदारी समिति की सदस्य श्रीमती सीता शुक्ला ने आत्मनिर्भरता पर बल दिया। भूतपूर्व छात्र संगठन की सदस्य श्रीमती अनुराधा देशमुख ने छात्राओं से इस अवसर का पूरा लाभ लेने की अपील की। प्राचार्य डॉ. विद्या चौधरी ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि प्रत्येक छात्रा को शिक्षा के माध्यम से स्वावलंबन की ओर बढ़ना चाहिए। उन्होंने बताया कि इस मेले का उद्देश्य जिले के युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराना है और प्रतिष्ठित कंपनियों द्वारा रिक्त पदों पर भर्ती की जाएगी। कार्यक्रम का संचालन अविनाश अंबुलकर ने किया।

मेले में एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस बैतूल, जय नारायण सर्वोदय विद्यालय घरौंदा केंद्र करजगांव के प्रतिभागियों द्वारा हस्तशिल्प प्रदर्शनी लगाई गई और यह संदेश दिया कि शारीरिक दिव्यांगता आत्मनिर्भरता में बाधा नहीं है। सुकन्या स्वास्तिक केयर द्वारा बायोडिग्रेडेबल सेनेटरी पैड का प्रदर्शन कर हेल्दी वुमन हैप्पी फैमिली का संदेश दिया गया। महाविद्यालय की छात्राओं ने हस्तशिल्प और विभिन्न प्रकार के व्यंजन के स्टॉल लगाकर आत्मनिर्भरता की राह पर आगे बढ़ने का परिचय दिया।

बैतूल में कलेक्टर ने अवैध होर्डिंग हटाने के दिए आदेश

आज होगी कार्रवाई, शहर में 70 से 80 होर्डिंग चिह्नित

बैतूल। कलेक्टर ने शहर से अवैध होर्डिंग हटाने के आदेश दिए हैं। रविवार सुबह 8 बजे से यह कार्रवाई शुरू होगी। इसके लिए नगरपालिका, राजस्व और पुलिस विभाग की संयुक्त टीम तैनात की गई है। नगरपालिका की टीम जेसीबी और ट्रैक्टर की मदद से होर्डिंग हटाएगी। प्रशासन ने अवैध होर्डिंग लगाने वालों को शनिवार रात तक स्वयं हटाने का समय दिया है। शहर में लगभग 70 से 80 अवैध होर्डिंग चिह्नित किए गए हैं। राजस्व निरीक्षक ब्रजगोपाल परते के अनुसार शहर में होर्डिंग लगाने का अधिकार प्रिंटिंग टास्क कंपनी को दिया गया है। कंपनी ने तीन साल के लिए 86 लाख रुपए अग्रिम जमा कर 91 होर्डिंग लगाए हैं। अब छोटे बोर्ड और साइन बोर्ड भी हटाए जाएंगे। शासकीय भूमि पर फिलहाल कोई अवैध होर्डिंग नहीं है। फिर भी प्रशासन सर्वे कर चिह्नांकन करेगा। निजी भूमि पर होर्डिंग लगाने के लिए भी अनुमति आवश्यक है। बिना अनुमति के लगे होर्डिंग भी हटाए जाएंगे।

सक्रियता और सकारात्मकता की प्रेरक मिसाल हैं कौशलजी-विजय दत्त श्रीधर

भोपाल। वरिष्ठ छायाकार जगदीश कौशल सक्रियता और सकारात्मकता की प्रेरक मिसाल हैं वे जब भी मुझे मिलते हैं मैं उनसे एक ही बात कहता हूं 'जवानी जिंदाबाद।' यह उदगार हैं पद्मश्री विजयदत्त श्रीधर निदेशक माधवराव सप्रे संग्रहालय के जो दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय में नगर के साहित्यकार और साहित्यिक संस्थाओं द्वारा दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय में वरिष्ठ छायाकार जगदीश कौशल के 93 वें जन्मदिवस के अवसर पर दीर्घायु कामना महोत्सव के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे । कार्यक्रम के आरम्भ में मंचस्थ अतिथियों ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया,इसके बाद दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय की निदेशक करुणा राजुरकर ने कौशलजी को जन्मदिन की शुभकामनाएं देते हुए स्वागत वक्तव्य दिया इसके पश्चात कार्यक्रम को।अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ साहित्यकार घनश्याम सक्सेना ने कौशल जी के साथ बिताए यादगार पलों को जीवन की अमूल्य निधि बताया तथा कैमरे के साथ उनके दृष्टि बोध की सराहना की, इस आयोजन में वरिष्ठ पत्रकार राजेश बादल ने कहा कि हमें कौशलजी के जीवन से जीवटता की प्रेरणा लेना चाहिए। वरिष्ठ पत्रकार राजेंद्र शर्मा ने कहा कि कौशल जी प्रगतिशील मूल्यों के पक्षधर होकर भी राष्ट्रीयता के बोध से संपृक्त हैं, और ऐसे प्रगतिशील पर कोटि-कोटि राष्ट्रवादी न्यौछावर किए जा सकते हैं । आयोजन में वरिष्ठ पत्रकार आलोक अवस्थी ने कहा कि हमारा लंबे समय से जगदीश कौशल का साथ रहा है वह हमेशा से अपने काम के प्रति समर्पित और आनंद से भरा हुआ जीवन जीने वाले व्यक्तित्व के स्वामी रहे हैं । इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार सुधीर सक्सेना एवं जयराम शुक्ल ने भी कौशल जी के व्यक्तित्व और कृतित्व से जुड़ी महत्वपूर्ण बातें साझा की कार्यक्रम का सुमधुर संचालन वरिष्ठ साहित्यकार घनश्याम मैथिल अमृत ने किया।इस अवसर पर जगदीश कौशलजी के व्यक्तित्व कृतित्व पर केंद्रित पत्रिका 'राग भोपाली' संपादक शैलेंद्र शैली के अंक का लोकार्पण भी किया गया। कार्यक्रम में नगर की साहित्यिक संस्थाओं मध्यप्रदेश लेखक संघ, महिला लेखिका संघ , दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय,लघुकथा शोध केंद्र समिति भोपाल की और से कौशल जी का स्वागत किया गया। इस अवसर पर कौशल जी ने अपने जीवन के अनेक रोचक और महत्वपूर्ण संस्मरण सुनाए और सभी उपस्थितजनों का आभार प्रकट किया।

पेंशनरों द्वारा छठवें वेतनमान के बकाया 32 माह की याचिका दायर

भोपाल। छठवें वेतनमान के बकाया 32 माह के एरियर्स का भुगतान करने दिए गए ज्ञापनों पर शासन की लगातार उपेक्षा से त्रस्त होकर पेंशनर्स वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा दायर याचिका को संज्ञान में लेते हुए उच्च न्यायालय जबलपुर ने शासन को नोटिस जारी कर अगली सुनवाई 25 अक्टूबर 2025 नियत की है । एसोसिएशन की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता के सी घिल्डियाल ने पैरवी की ।

एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष आमोद सक्सेना ने बताया कि मध्यप्रदेश वेतन पुनरीक्षण नियम 2009 के अंतर्गत राज्य के कर्मचारियों के साथ-साथ पेंशनरों को भी 1 जनवरी 2006 से छठवें वेतनमान का लाभ देने का निर्णय राज्य शासन ने लिया था किंतु पेंशनरों को इसका लाभ 1 सितंबर 2008 से दिया गया । 1 जनवरी 2006 से 31 अगस्त 2008 तक के बकाया 32 माह के एरियर्स का आज तक भुगतान नहीं किया गया । सक्सेना ने बताया कि 1 जनवरी 2006 से छठवें वेतनमान का लाभ पेंशनरों को देने के संबंध में छत्तीसगढ़ 2010 में ही अपनी स्पष्ट सहमति दे चुका है ।

एसोसिएशन के संरक्षक गणेश दत्त जोशी ने मध्यप्रदेश शासन पर अपने ही निर्णय का पालन नहीं करने का आरोप लगाते हुए कहा कि छठवें वेतनमान का लाभ 1 जनवरी 2006 से दिए जाने के संबंध में मंत्रि परिषद का निर्णय, गजट नोटिफिकेशन एवं तत्कालीन मुख्य सचिव राकेश साहनी के स्पष्ट निर्देश होने के बाद भी आदेश जारी नहीं करने से स्पष्ट है कि प्रदेश का वित्त विभाग विगत 25 वर्षों से लगातार आर्थिक रूप से प्रताड़ित कर प्रदेश के उम्र दराज पेंशनरों के संवैधानिक अधिकारों का हनन कर रहा है ।

भोपाल के जिला अध्यक्ष सुरेश शर्मा ने आरोप लगाया है की वृद्ध पेंशनरों पर लगातार आर्थिक अत्याचार कर उन्हें न्यायालय की शरण में जाने को सरकार विवश कर रही है । एसोसिएशन के प्रांतीय उपाध्यक्ष संतोष ठाकुर, शंभूनाथ मुखर्जी, सचिव यशवंत सिंह बेस, शैलेंद्र श्रीवास्तव एवं महिला संयोजक रेणु गव्हाड ने कहा है कि सरकार स्व विवेक से लंबित समस्याओं के शीघ्र निराकरण की पहल कर वृद्ध पेंशनर्स के प्रति संवेदनशीलता का परिचय दे ।

दीपिका पादुकोण 'कल्कि पार्ट 2' से बाहर

दीपिका पादुकोण करियर में उतार-चढ़ाव देखने के बाद आज इस मुकाम तक पहुंच चुकी है कि करोड़ों दिलों पर राज करती हैं। लोग उनकी फिल्मों के दीवाने हैं। उनकी हाइट और पर्सनालिटी लाजवाब है, जो किसी भी अभिनेत्री को टक्कर देती है। आए दिन मीडिया में छाई रहने वाली एक्ट्रेस एक बार फिर लाइमलाइट में बनी हुई हैं। नाग अश्विन की मेगा बजट फिल्म 'कल्कि 2898 एडी' के मेकर्स ने यह घोषणा की, कि दीपिका अब 'कल्कि 2898 एडी पार्ट 2 'का हिस्सा नहीं होंगी।

दीपिका पादुकोण ने बहुत कम समय में बड़ी सफलता हासिल की। शुरुआत में उन्हें काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। लेकिन, कुछ फिल्म में लीड रोल मिलने के बाद उनकी किस्मत रातों-रात पलट गई। आज वे किसी की पहचान को मोहताज नहीं है। उन्हें लोग मस्तानी के नाम से भी जानते हैं। प्रोफेशनल लाइफ में वह जितनी भी कॉन्फिडेंट रही, लेकिन पर्सनल लाइफ में एक समय वह डिप्रेशन का शिकार हो चुकी थीं। चेन्नई एक्सप्रेस, बाजीराव मस्तानी, पद्मावत, ये जवानी है दीवानी और 'छपाक' जैसी फिल्मों में उनके अलग-अलग किरदारों ने उन्हें दर्शकों के दिल में खास जगह दिलाई। दीपिका ने न सिर्फ देश में, बल्कि हॉलीवुड तक अपनी पहचान बनाई है। उनकी फिल्मों की गिनती बॉक्स ऑफिस रिकॉर्ड तोड़ने वाली लिस्ट में होती है।

दरअसल, पिछले कुछ दिनों में उनका नाम लगातार विवादों से भी जुड़ रहा है, खासकर काम के घंटे और फीस को लेकर वह काफी चर्चा में रही हैं। दरअसल, नाग अश्विन की मेगा बजट फिल्म कल्कि 2898 एडी के मेकर्स ने यह घोषणा की है कि दीपिका अब कल्कि 2898 एडी पार्ट 2 का हिस्सा नहीं होंगी, इससे इंडस्ट्री में हलचल मच गई है। कई लोगों ने मेकर्स को दोषी ठहराया तो कई ने कहा कि दीपिका का रवैया प्रोफेशनल नहीं रहा।

दीपिका और मेकर्स के बीच मतभेद की असली वजह उनकी दो कड़ी शर्तें थीं। दीपिका ने पहली फिल्म की कमाई को देखते हुए अपनी फीस बढ़ाने की मांग की। वह चाहती थीं कि उन्हें पहले पार्ट के मुकाबले 25 प्रतिशत ज्यादा भुगतान किया जाए। साथ ही उन्होंने यह शर्त भी रखी कि वह दिनभर में सिर्फ 7 घंटे ही शूटिंग करेंगी। 'कल्कि 2898 एडी पार्ट-2' जैसी भारी-भरकम वीएफएक्स फिल्म के लिए लंबे शेड्यूल और ज्यादा काम का वक्त जरूरी है। इतने कम समय में शूटिंग करने से बजट और प्रोडक्शन शेड्यूल पर बुरा असर पड़ रहा था। मेकर्स ने

दीपिका को मनाने की कोशिश की। उन्होंने उन्हें आराम के लिए एक लग्जरी वैनिटी वैन देने का प्रस्ताव रखा, ताकि लंबी शिफ्ट के बावजूद उन्हें किसी तरह की परेशानी न हो। लेकिन दीपिका ने इसे ठुकरा दिया।

मेकर्स ने उन्हें कहा कि फिल्म के लीड हीरो प्रभास ने पार्ट-2 के लिए अपनी फीस नहीं बढ़ाई और पूरी तरह शूटिंग के प्रति समर्पित हैं। वहीं, अमिताभ बच्चन जैसी शख्सियत भी बिना किसी अतिरिक्त शर्त के काम कर रहे हैं। इसके बावजूद, दीपिका अपने स्टैंड से पीछे नहीं हटीं। दीपिका के साथ उनकी निजी टीम भी शूट पर जाती है। बताया जाता है कि उनकी टीम में 25 लोग शामिल होते हैं। उन्होंने प्रोड्यूसर्स से यह मांग रखी कि पूरी टीम के लिए फाइव-स्टार होटल में रहने और खाने की व्यवस्था की जाए। इसका पूरा खर्च प्रोडक्शन हाउस उठाए। बड़े बजट वाली फिल्म होने के बावजूद मेकर्स को यह डील मंजूर नहीं थी। पहले से ही वीएफएक्स और लोकेशन पर भारी खर्च हो रहा था। इसलिए ऐसा फैसला लिया गया। नाग अश्विन की मेगा बजट फिल्म कल्कि 2898 एडी ने 2024 में रिलीज हुआ था, जिसने बड़े पर्दे पर इतिहास रच दिया था। इसमें प्रभास, अमिताभ बच्चन और दीपिका पादुकोण जैसे सितारों नजर आए थे। कहानी में दीपिका का किरदार सम 80 फिल्म की आत्मा माना गया था। वह कल्कि को जन्म देने वाली थीं और पूरी कहानी उनके इर्द-गिर्द बुनी गई थी। ऐसे में दर्शक इसके सीक्वल का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। अब सवाल यह है कि कल्कि 2898 एडी पार्ट 2 में दीपिका की जगह कौन लेगा। चूंकि कहानी उनके किरदार सम 80 के इर्द-गिर्द घूम रही थी, इसलिए स्क्रिप्ट में बदलाव करना मेकर्स के लिए बड़ी चुनौती होगी।

हॉलीवुड की हीरोइन करेगी बॉलीवुड में अभिनय

हॉलीवुड एक्ट्रेस सिडनी स्वीनी जल्द ही बॉलीवुड में कदम रख सकती हैं। माना जा रहा है कि उन्हें भारत की अब तक की सबसे महंगी फिल्मों में से एक में काम करने का ऑफर मिला है। उन्हें 530 करोड़ से ज़्यादा के भुगतान का प्रस्ताव दिया गया है। एक प्रोडक्शन कंपनी ने हॉलीवुड स्टार से बॉलीवुड की अब तक की सबसे महंगी फिल्मों में से एक में काम करने के लिए 45 मिलियन पाउंड (530 करोड़ से ज्यादा) का सौदा किया है। रिपोर्ट में कहा गया है, 'इस सौदे में 35 मिलियन पाउंड (415 करोड़ से ज्यादा) की फीस और 10 मिलियन पाउंड (115 करोड़ से ज्यादा) के समझौते शामिल हैं।

निर्माताओं को उम्मीद है कि सिडनी की स्टार पावर फिल्म को अंतरराष्ट्रीय बाजार में ज्यादा दर्शकों तक पहुंचाने में मदद करेगी।' कहा जा रहा है कि फिल्म में सिडनी एक युवा अमेरिकी स्टार की भूमिका निभाएंगी, जिसे एक भारतीय सेलिब्रिटी से प्यार हो जाता है। फिल्म

की शूटिंग 2026 की शुरुआत में न्यूयॉर्क, पेरिस, लंदन और दुबई सहित कई जगहों पर होने की उम्मीद है। सिडनी पहले तो इस प्रस्ताव से चौंक गईं। 45 मिलियन पाउंड एक अविश्वसनीय रकम है। लेकिन, यह परियोजना दिलचस्प है, और यह उनकी वैश्विक पहचान को और भी ऊंचा कर सकती है।

भारतीय फिल्म उद्योग शक्तिशाली और तेजी से बढ़ रहा है और यह फिल्म इसके निर्माण को अंतरराष्ट्रीय बाजार में लाने के लिए बनाई गई है। अभी तक कुछ भी तय नहीं हुआ है, लेकिन यह एक बड़ा अवसर है और सिडनी अपने विकल्पों पर सावधानी से विचार कर रही हैं। पैसा ही सब कुछ नहीं है, और उनके पास कई प्रोजेक्ट्स हैं, लेकिन यह उन्हें एक अभिनेत्री के रूप में नई ऊंचाइयों तक ले जा सकता है।

सिडनी के प्रतिनिधियों ने अभी तक इस पर कोई टिप्पणी नहीं की है। सिडनी ने ड्रामा यूफोरिया और ब्लैक कॉमेडी द व्हाइट लोटस में टीवी भूमिकाओं से पॉपुलैरिटी हासिल की थी। वह जल्द ही क्रिस्टी में नजर आएंगी, जहां वह अमेरिकी पेशेवर फाइटर क्रिस्टी मार्टिन की भूमिका निभा रही हैं, जो स्पोर्ट्स इलस्ट्रेटेड के कवर पर आने वाली पहली महिला मुक्केबाज हैं। बेन फोस्टर और मेरिट वीवर अभिनीत यह फिल्म 7 नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।

रियल बॉक्स

बर्बाद होते अफगानिस्तान का दर्द भरा सिनेमा

हेमंत पाल
लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

बरसों से अफगानिस्तान के लोग कई तरह की पीड़ाओं से जूझ रहे हैं। उनकी कहानियों में दर्द का हिस्सा ज्यादा और मनोरंजन कम है! यही वजह है कि इस देश के सिनेमा कल्चर को लेकर कम ही बातचीत होती है। अफगानिस्तान में जिस तरह से आतंकवादी संगठन ने कब्ज़ा किया, वहां का फिल्म उद्योग तहस-नहस हो गया। लेकिन, फिर भी वे अफगानी फिल्मकारों के सोच को नहीं दबा सके। इतने दबाव और हिंसा के बाद भी आश्चर्य की बात है कि अफगानिस्तान में बनी ज्यादातर फिल्में तालिबानी कट्टरपंथ के खिलाफ बनी! दरअसल, ये उनका सिनेमाई गुस्सा है। क्योंकि, तालिबानियों के सत्ता में आते ही वहां की कला, साहित्य, सिनेमा और संस्कृति एक तरह से खत्म हो गई। दुनिया में सिनेमा के मामले में भारत सबसे समृद्ध है। जबकि, उसके आसपास के देशों में ये माध्यम उतना ही कमजोर। सालों से भारत में बना सिनेमा ही अफगानिस्तान के लोगों का भी मनोरंजन कर रहा है। ऐसे में इस देश में भी भारतीय फिल्मों का बाजार सालों से सजा है।

अफगानी लोगों ने भारत की फिल्मों और यहां के कलाकारों को इतना आत्मसात कर लिया कि वे सभी इन्हें अपने लगने लगे। अमिताभ बच्चन, शाहरुख़ खान, सलमान खान के साथ माधुरी दीक्षित और कैटरीना कैफ भी वहाँ बेहद लोकप्रिय हैं। इनमें भी अमिताभ और कैटरीना के तो वहाँ पोस्टर बिकने की खबर है। अफगानिस्तान और भारत के रिश्ते भी बहुत गहरे रहे हैं। यहां तक कि दोनों देशों की संस्कृति और सभ्यता भी कहीं न कहीं जुड़ी है। शायद भारतीय फिल्मों के प्रति इसी आसक्ति का ही असर है कि रवींद्रनाथ टैगोर की कहानी 'काबुलीवाला' पर 1957 में पहले बंगाली में तपन सिन्हा और बाद में 1961 में हिंदी में हेमेन गुप्ता सहित कई निर्देशकों ने सफल फिल्में बनाई। अफगानिस्तान में 2007 में हॉलीवुड की फिल्म 'द काइट रनर' बनी। उससे पहले 1975 में फीरोज खान ने धर्मात्मा, मुकुल आनंद ने 1992 में 'खुदा गवाह' और कबीर खान ने 2006 में 'काबुल एक्सप्रेस' फिल्म बनाई।

1968 में जब अफगानिस्तान में फ़िल्में बनना शुरू हुई, सरकारी बैठकों और सम्मेलनों पर प्रकाश डालते हुए वृत्तचित्र और समाचार फ़िल्में बनाई जाने लगीं थी। इन फिल्मों को भारत में भी फीचर फिल्मों से पहले सिनेमाघरों में दिखाया जाता! नए दौर में अफगान कलाकारों को लेकर काबुल में बनाई गई पहली फीचर फिल्म थी 'लाइक ईगल्स' जिसमें जहीर वैदा और नाजिया ने अभिनय किया था। इसके बाद अफगान फिल्मकारों ने 'एज' नाम से तीन भाग वाली फिल्म बनाई थी। इसमें स्मगलर, शूटर्स और 'फ्राइडे नाइट' शामिल थे। इस दौर की दो अन्य फिल्में 'विलेज ट्यून्स' और 'डिफिकल्ट डेज' हैं। इन सभी फिल्मों को ब्लैक एंड व्हाइट बनाया गया था। इस युग के फिल्म कलाकारों में खान अका सोरूर, रफीक सादिक, अजीजुल्लाह हदफ, मशाल होनारयार और परवीन सनतगर शामिल थे। 80 के दशक की शुरुआत में अफगानिस्तान में निर्मित पहली रंगीन फिल्में थी रन अवे (फरार), लव एपिक (हमासा ए इशग), सबूर सोल्जर (सबूर सरबाज), ऐश (खाके स्टार) और 'लास्ट विशेज' थीं। ये फिल्में हालांकि तकनीकी रूप से उतनी कुशल नहीं थी, जितनी भारत या अन्य देशों में बनती है। लेकिन ये फ़िल्में अफगानी जिंदगी के साथ तालमेल बैठाती थीं। क्योंकि, वे उनके जीवन को दिखाती थीं।

1996 में जब तालिबानियों ने जब वहां की सत्ता में दखल देना शुरू किया, तो सबसे पहले सिनेमाघरों पर हमले किए गए। कई फिल्में जला दी गई। तालिबानियों ने लोगों के टीवी देखने से भी लोगों को रोक दिया, सिनेमाघर बंद कर दिए गए। बाद में ये सिनेमाघर चाय की दुकानें बन गए या रेस्तरां। कुछ सिनेमाघर खंडहर हो गए। अफगान फिल्मकार के हबीबुल्लाह अली ने तालिबानियों से फिल्मों के विनाश को रोकने

के लिए हजारों फिल्मों को भूमिगत कर दिया या कमरों में छुपा दिया। 2002 में तालिबान आतंक के बाद पहली फिल्म 'टेली ड्रॉप' फिल्म बनाई गई। इससे पहले यहाँ बनने वाली फिल्म थी 'ओरजू' जो 1995 में बनी थी। 1996 में यहाँ तालिबानियों ने कब्ज़ा कर लिया तो सिनेमा की गतिविधियां बंद हो गई।

अफगानिस्तान में सबसे पहले सिनेमा लाने का श्रेय वहां के राजा (अमीर) हबीबुल्ला खान (1901-1919) को दिया जाता है। उन्होंने दरबार में प्रोजेक्टर से कुछ फिल्में दिखाई थी। तब वहाँ प्रोजेक्टर को 'जादुई लालटेन' कहा जाता था। जनता के लिए उन्होंने काबुल के पास पघमान शहर में पहली बार 1923 में एक मूक फिल्म के प्रदर्शन भी किया था। लेकिन, अफगानिस्तान में सिनेमा का निर्माण बेहद अस्त व्यस्त रहा। 1946 में बनी 'लव एंड फ्रेंडशिप को पहली फीचर फिल्म माना जाता है। उसके बाद ज्यादातर डाक्यूमेंट्री ही बनी। 1990 में छिड़े गृहयुद्ध और 1996 में तालिबानियों के सत्ता में आने के बाद वहाँ फ़िल्में बनाना और देखना प्रतिबंधित कर दिया।

जहां तक अफगानी फिल्मों की दुनिया में पहचान बनने का सवाल है, तो वह थी 2003 में बनी सिद्दिक बर्मक की फिल्म 'ओसामा!' इस फिल्म को कांस फिल्म समारोह समेत कई बड़े फिल्म फेस्टिवल में अवॉर्ड मिले। बताते हैं कि इस फिल्म ने 39 लाख डॉलर का कारोबार किया था। इसके बाद 2004 में आई अतीक रहीमी की फिल्म 'अर्थ एंड एशेज (खाकेस्तार-ओ-खाक) का वर्ल्ड प्रीमियर 57वें कांस फिल्म फेस्टिवल के 'अन सर्टेन रिगार्ड' खंड में हुआ। यह 13 साल की लड़की (मरीना गोलबहारी) की कहानी है, जो अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए लड़का बनकर ओसामा नाम से काम करती है। उसके परिवार में कोई मर्द नहीं बचा था। वह माँ के साथ एक अस्पताल में काम करती थी, जिसे बाद में तालिबानियों ने बंद कर दिया। औरतों के काम करने पर रोक लगा दी और लड़कों को पकड़कर इस्लामी ट्रेनिंग कैंप भेजने लगे। एक दिन ओसामा को भी पकड़ लिया गया। वहां राज खुलने पर उसे बुरी तरह यातनाएं दी गईं। बाद में एक बूढ़े के साथ उसकी जबरन शादी करा दी जाती है।

इसके बाद जिस फिल्म की चर्चा होती है, वह थी 2011 में आई ईरानी फिल्मकार वाहिद मौसेन की फिल्म 'गोल चेहरे!' यह फिल्म एक सच्ची घटना पर आधारित थी। जिसमें लोगों ने जान पर खेलकर तालिबानियों के हमले से कई फिल्मों के दुर्लभ प्रिंट बचाए थे। एक उन्मादी सिनेमा प्रेमी अशरफ खान गोल चेहरे नाम का एक सिनेमा हॉल चलाते थे, जिसे तालिबानियों ने जलाकर नष्ट कर दिया था। वे इस सिनेमा हॉल को फिर शुरू करना चाहते हैं। सत्यजीत राय की फिल्म 'शतरंज के खिलाड़ी' से सिनेमा हॉल का उद्घाटन होता है। लेकिन, जैसे ही फिल्म शुरू होती है, तालिबानी सिनेमा हॉल को बम से उड़ा देते हैं। अशरफ खान को मार देते हैं और सभी फिल्मों को जला देने का फतवा देते हैं। लेकिन, एक विधवा डॉक्टर रूखसारा दुर्लभ फिल्मों को बचाने में कामयाब हो जाती है। एक बार फिर गोल चेहरे सिनेमा हॉल बनता है और 'शतरंज के खिलाड़ी' से ही उसका उद्घाटन होता है। फिल्म का ये कथानक हिंदी फिल्मों को लेकर अफगानियों की दीवानगी बताता है।

लम्बे समय बाद दुनिया में यहां की फिल्मों की चर्चा मोहसिन मखमलबफ की 2001 में आई फिल्म 'कंधार' से हुई। 20 से ज्यादा फिल्म फेस्टिवल में यह फिल्म दिखाई गई। इसके बाद 2003 की फिल्म 'ऐट फाइव इन द आफ्टरनून' भी चर्चा में आई। फिल्म की कहानी एक अफगान लड़की पर केंद्रित थी, जो परिवार की इच्छा के खिलाफ स्कूल जाती है। वह भविष्य में अफगानिस्तान का राष्ट्रपति बनने का सपना भी देखती है। अतीक रहीमी की 2004 में आई फिल्म 'अर्थ एंड एशेज' का मूल नाम 'खाकेस्तार ओ खाक' था। यह फिल्म अफगानिस्तान में चल रहे गृहयुद्ध से हुए विनाश में मनुष्यता खोजने की सिनेमाई कोशिश है। फिल्म में दादा और पोते की आंखों की आँखों के दृश्य ही फिल्म की असली ताकत है। अफगानिस्तान पर अमेरिकी बमबारी से बर्बाद हुए देश को लैंडस्केप की तरह फिल्माया गया था।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

सिनेमा में भी हुए नवरात्रि और दुर्गा पूजा के दर्शन

अशोक जोशी

बरसात की बिदाई के बाद माहौल में ठंडक सी घुलने लगी है। सर्द होती रातों में नवरात्रि का महत्व इसलिए भी सबस ज्यादा महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके आगमन के साथ ही देशभर में त्यौहारों और धूमधाम का सिलसिला आरम्भ हो जाता है। इसी त्यौहारी माहौल और धूमधाम के माहौल को हिन्दी फिल्मों में भी उल्लेखनीय रूप से

शामिल किया जाता रहा है हिन्दी सिनेमा में नवरात्रि का उल्लेख फिल्मों के सांस्कृतिक और धार्मिक संदर्भ को दर्शाने, भावनात्मक गहराई जोड़ने और भक्तिमय कहानियों को कहने के लिए किया जाता है। कहीं गरबों की धूम तो कहीं दुर्गा पूजा के दृश्य तो कहीं मां दुर्गा के चमत्कारों पर आधारित 'फिल्मां से दर्शक की भावनाएं उमड़ने लगती है और यही सब कुछ फिल्म की सफलता का एक घटक भी बन जाता है।

नवरात्रि साल का सबसे महत्वपूर्ण हिंदू त्योहारों में से एक है. जो पूरे भारत में बड़ी भक्ति और उत्साह के साथ मनाया जाता है. इस साल नवरात्रि 22 सितम्बर को शुरू होगा, जिसमें भक्त देवी दुर्गा के नौ रूपों की पूजा करते हैं। 2 अक्टूबर को दशहरे के दिन इसका समापन होगा। अपने व्रत, पूजा, गरबा और डांडिया डांस के लिए जाना जाने वाला नवरात्रि को बॉलीवुड फिल्मों में भी खूबसूरती से कैद किया गया है।

हिन्दी फिल्मों में नवरात्रि के दौरान होने वाले गरबा, डांडिया, और दुर्गा पूजा जैसे त्यौहारों और आयोजनों को दिखाया जाता है। 'जय संतोषी मां' जैसी फिल्में मां दुर्गा के चमत्कारों और भक्ति पर आधारित हैं, जो भक्तों के दिलों में भक्ति को बढ़ावा देती हैं। जबकि नवरात्रि और दुर्गा पूजा के दृश्य पात्रों के संघर्ष, मुक्ति और भावनात्मक यात्राओं को दर्शाते हैं। नवरात्रि से जुड़े लोकप्रिय गाने और नृत्य फिल्म का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। यही कारण है कि पिछले कुछ सालों में बॉलीवुड ने कई फिल्मों का निर्माण किया गया जो इस नवरात्रि को पूरी शिददत के साथ पर्दे पर पेश करती हैं.।

वैसे तो फार्मूला फिल्मों के सरताज मनमोहन देसाई ने अपनी 1979 की अपनी फिल्म 'सुहाग' में नवरात्रि का सुंदर फिल्मांकन कर दर्शकों को मोहित कर चुके है। इस फिल्म में जब अमिताभ ओ शेरा वाली गाते हैं और इसकी धुन पर रेखा थिरकती है तो सिनेमा हॉल में गरबे का भव्य और संगीतमय वातावरण निर्मित हो जाता है। अमिताभ की बहू ऐश्वर्या राय और सलमान खान की साल 1999 की रोमांटिक फिल्म 'हम दिल दे चुके सनम' का गरबा दृश्य और नवरात्रि का फिल्मांकन भी दर्शनीय था। ढोली थारो ढोल बाज से निर्देशक संजय लीला भंसाली ने पर्दे पर गुजरात के नवरात्रि पर्व को सजीव कर दिया था। ये फिल्म गुजराती

पृष्ठभूमि पर आधारित है। गुजरात में नवरात्रि का त्योहार बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है।

चेतन भगत के उपन्यास 'द 3 मिस्टेक्स ऑफ माई लाइफ' पर आधारित फिल्म काई पो चे में भी नवरात्रि के दर्शन होते है। फिल्म के यादगार सीन में से एक नवरात्रि के नौ उत्सव के दौरान राजकुमार राव और अमृता पुरी पर फिल्माए गया गाना शुभारंभ की धुन पर गरबा और डांडिया खेलने को दिखाया। साल 2013 की रोमांटिक फिल्म गोलियों की रासलीला राम-लीला में भी इस नवरात्रि को काफी अच्छे तरीके से दिखाया गया है। संजय लीला भंसाली द्वारा निर्देशित फिल्म में नवरात्रि को सजीव कर दिया गया था। . लीला का किरदार निभाने वाली दीपिका ने नगाड़ा संग ढोल पर धमाकेदार परफॉर्मेंस दी थी।

सलमान खान के बहनोई आयुष शर्मा ने अपने अभिनय करियर की शुरुआत फिल्म 'लवयात्री' से की। इस फिल्म की नायिका वरीना हुसैन थी। फिल्म का गाना चोगाड़ा जिस साल रिलीज हुआ था, उसी साल ये नवरात्रि का गरबा एंथम बन गया। देश के हर दुर्गा पण्डाल में इस गाने की तेज धुन ने सभी को थिरकने पर मजबूर कर दिया। ये आज भी उन गानों में से एक है, जिन्हें नवरात्रि के दौरान जरुर बजाया जाता है। 'सत्यप्रेम की कथा' फिल्म में कार्तिक आर्यन और कियारा आडवाणी मुख्य भूमिका में हैं। कहानी उस जोड़ी के इर्द-गिर्द घूमती है, जो नवरात्रि के दौरान गरबा के दौरान सत्यप्रेम से मिले और कथा से प्यार करने लगे।

यदि फिल्मों में नवरात्रि के फिल्मों को शामिल किए जाने का इतिहास देखा जाए तो पता लता है कि संजय लीला भंसाली इसमे सबसे आगे रहे हैं। उनका गरबा प्रेम जगजाहिर है। यही कारण है कि जब भी फिल्मों में दुर्गा पूजा दिखाने की बात होती है संजय लीला भंसाली की फिल्म 'देवदास' का जिक्र जरूर होता है। शरत चंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास पर आधारित इस फिल्म में दुर्गा पूजा को शानदार तरीके से दिखाया गया था। ऐश्वर्या राय और माधुरी दीक्षित ने 'डोरा रे डोला' पर डांस कर सबका दिल जीता था तो मां दुर्गा का पंडाल भी बेहद खूबसूरत था।

2005 में आई फिल्म 'परिणीता' की कहानी भी शरत चंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास पर आधारित थी। फिल्म में विद्या के साथ सैफ अली खान और संजय दत्त अहम भूमिका में थे। इस फिल्म में भी कोलकाता को बहुत करीब से दिखाया गया है और ऐसे में दुर्गा पूजा के दौरान निभाई जाने वाली रस्में भी पर्दे पर भव्य तरीके से दर्शायी गई थीं। सुजॉय घोष की 2012 में आई फिल्म 'कहानी' में विद्या बालन मुख्य भूमिका में थीं। फिल्म की कहानी कोलकाता की पृष्ठभूमि पर आधारित है, जिसमें लंदन से आई एक महिला अपने पति को ढूंढने निकली है।कोलकाता में दुर्गा पूजा को बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है और ऐसे में फिल्म में भी इसे बेहतरीन ढंग से पेश किया गया था।

2013 में आई 'लुटेरा' दुर्गा पूजा के साथ शुरू होती है और पाखी (सोनाक्षी सिन्हा) के परिवार का परिचय देती है, जो दर्शकों का ध्यान खींचती है। इस दौरान सबसे ज्यादा शानदार त्योहारी सीजन के दौरान बंगाल के लोक रंगमंच जात्रा का मंचन लगता है। इसके अलावा कोलकाता की पृष्ठभूमि पर आधारित 'गुंडे' में प्रियंका चोपड़ा दुर्गा पूजा पंडाल में अपने प्रेमी का इंतजार करती नजर आती हैं। दुर्गा पूजा के इस सिलसिले को आगे बढाने वाली नवीनतम फिल्म करण जौहर 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' है। आलिया भट्ट और रणवीर सिंह अभिनीत इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर शानदार प्रदर्शन किया था तो इसमें दिखाया गया दुर्गा पूजा का सीन कहानी के लिए अहम था। इसमें मां दुर्गा की पूजा-अर्चना कर रणवीर कथक करते हुए नजर आते हैं तो बाद में 'ढिंढोरा' गाने पर भी थिरकते हैं।

जहां काम आए पुलिस... का करे मशीन !

अधिकार

प्रकाश पुरोहित

कभी शहरी चौराहे के बीचोबीच बने गोल-स्टैंड पर ट्रैफिक का सिपाही खड़ा रहता था और पूरी मुस्तैदी से चारों दिशाओं को यूं संभालता था कि जैसे किसान खेती को ढोरों से बचाता है। सिपाही के मुंह में सीटी हमेशा लगी रहती थी और उसे बजा कर ही वह, जाने या रुकने का कहता था। यूं खड़े होने का असर भी होता था कि लोग रुक जाते थे और इशारा मिलते ही चल देते थे। 'समझदार को इशारा', शायद यहीं से निकला होगा। ये सिपाही सफेद वर्दी में होता था और ज्यादातर समय संघ जैसी निक्कर पहनता था। सिर्फ सर्दी के कुछ दिनों में ही उसे पतलून मिलती थी, जैसी संघ वाले आजकल पहनने लगे हैं।

आज की तरह बिजली से चलने वाले सिग्नल तब नहीं होते थे कि कोई भी रेड-लाइट जंप कर जाए और पुलिस सिर्फ चालान भेज कर समझ ले कि ट्रैफिक सुधर गया। साइकल को भी लाइसेंस रखना होता था, जो पीतल का होता था और साइकल के ही किसी एक हिस्से में जड़ा होता था। तब साइकल में आगे-पीछे बत्ती होती थी और नहीं होने पर तब भी पुलिस तोड़-बट्टा कर लेती थी। वैसे तो पूरा शहर ही एक-दूसरे के खानदान तक से परिचित होता था तो ज्यादातर वार्निंग से छूट जाते थे या फिर घर जाकर डांट खाते थे।

जैसे आजकल ए.आइ. के युग में मशीन डरा रही है मनुष्य को, उस जमाने में मनुष्य ही मशीन की तरह काम करता था। सुबह आठ बजे से बारह और शाम चार से आठ शहर नियम-कायदे से चलता था कि चौराहे पर सिपाही निगहबान रहता था। पब्लिक भी सोचती थी कि चार घंटे की ही तो बात है, फिर तो चौराहा फ्री हो ही जाएगा। आजकल की तरह नहीं कि आठ बजे से सिग्नल शुरू और रात ग्यारह बजे तक बंद-चालू हो रहे हैं या फिर कभी बंद नहीं होते ! तब या तो सिपाही होता था या फिर बेसुध ट्रैफिक।

सिपाही आम तौर पर साइकल से ही चौराहे की ड्यूटी पर आते-जाते थे और उनकी साइकल दूर पेड़ के नीचे खड़ी रहती थी और कमाल की बात, कभी चोरी भी नहीं होती थी। आजकल तो इनकी मोटरबाइक तक चोरी हो जाती है, इसलिए ज्यादातर चौराहों पर पुलिस अपनी या दूसरों की मोटरसाइकल पर ही बैठी नजर आती है।

हां कह सकते हैं, तब शहर की आबादी कम थी, तो निवेदन है कि तब पुलिस फोर्स भी तो इतना नहीं होता था। एक सिपाही, बड़े से बड़ा चौराहा संभाल लेता था, जबकि आज बिजली के सिग्नल और तीन-चार का स्टाफ भी नहीं संभाल पाता है। यह सही है कि नियम तोड़ने वाले मशीन से नहीं, मनुष्य से डरते हैं, उसकी इज्जत करते हैं। अगर कोई गलती से भी गलत रास्ते चल देता था तो सिपाही 'अबे ओ, गर्ग सा'ब की औलाद..., किधर, हाथ नजर नहीं आ रहा है क्या, बुलाऊं बाबूजी को अभी' और गर्ग साहब की औलाद सूत-सांवल में आ जाती थी। ज्यादा कुछ हो तो घर जाकर भी शिकायत हो जाती थी कि साहबजादे ज्यादा ही उड़ रहे हैं, पर निकल आए हैं... और चाय-नाश्ता करके जाते थे। गर्ग सा'ब भी मान रखते थे और सामने ही साहबजादे का कान मरोड़ कर यह सबूत देते थे कि आइंदा ऐसा नहीं करेगा। फिर साहबजादे भले ही मन ही मन कह रहे हों कि करूंगा तो फिर भी मन की ही।

तब सिपाही के कमरपट्टे में एक होल होता था और उसमें सफेद छाता लगने की गुंजाइश रहती थी, जिसके बारे में यह अफवाह थी कि यह धूप और बारिश में बचाव का सरकारी उपाय है। यह छाता एक तरह से वर्दी का ही अंश होता था, जो सिर्फ सर्दी में ही बचाव नहीं करता था। यूं भी समझ सकते हैं कि पतलून जब नजर आने लगती थी तो छाता फिर नदारद हो जाता था और छाता, छाते ही पतलून गायब हो जाती थी। इतना दिमाग किसने और क्यों लगाया होगा आज समझना किसी पायथोगोरस को हल करने से ज्यादा मुश्किल है।

तब पुलिस लाइन में भी सफेद वर्दी से यह समझ आता था कि ये अपर क्लास ऊपर हैं, दलितों में ब्राह्मण। उन दिनों ट्रैफिक पुलिस

होना काबलियत और संपन्नता की निशानी थी कि इनके घरों में रेडियो होता था, हाथ और दीवार घड़ी भी नजर आ ही जाती थी और ये दूसरे सिपाहियों यानी खाकी वर्दी वाले को ब्याज-बट्टे पर पैसा भी उधार देने की हैसियत रखते थे। हां, ये बाजार से दूध नहीं खरीदते थे, क्योंकि गाय होना तो ट्रैफिक पुलिस में होने की अनिवार्य शर्त थी। पत्नी अकसर सत्यनारायण की कथा करवाती थी या फिर कोई उद्यापन कर रही होती थी, क्योंकि उन दिनों भी रिश्वत लेते पकड़े जाने का चलन शुरू हो चुका था। संगीत वाली कथा यानी फिल्मी गानों पर यदि कहीं होती थी तो लोग समझ जाते थे मातादीन हेडसा'ब के यहां हो रही होगी, ट्रैफिक पुलिस में है ना ! तब खाकी वर्दी में हीनभावना रहती थी और यह संकल्प पनपता रहता था कि रिटायर होने से पहले हेड सा'ब भले ही ना हो पाऊं, ट्रैफिक में तो जाना ही है।

पहले यह जिद रहती थी ट्रैफिक वालों में कि गलती नहीं करने देंगे, जबकि आजकल यह देखने में आता है कि जो गलती नहीं करते हैं, उन्हें आग्नेय नेत्रों से घूरा जाता है, ज्यादा समझदार हो गए हो ! समझ में यह नहीं आता कि जब ट्रैफिक-सिग्नह हैं तो फिर चौराहे पर सिपाहियों का समूह क्या करता रहता है? चालान तो कैमरे ही बना देते हैं, जो कभी सर्व नहीं होते और बरसों तक पड़े रहते हैं। जैसे अभी यूपी में चार साल के 37 हजार चालान रद कर दिए गए। क्या इसी उम्मीद में लोग ठेंगे पर रखते हैं पुलिस को? ये कायदे की बातें आज इसलिए याद आ रही हैं कि दुनिया के करीब तीस देशों ने अपनी सड़कों से 'ट्रैफिक-सिग्नल' हटा दिए हैं... कि पुलिस जरूरी है !

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

पितृ मोक्ष अमावस्या- कुछ बातें अधूरी

जिंदगी जब खूबसूरत बिताई या ना बिताई हो हम सभी चाहते हैं मौत भी खूबसूरत हो। भला हम तो नहीं रहेंगे फिर हमारे बच्चे क्या करेंगे, हमें क्या पता? पर मैंने सोचा कि जाने के बाद चूंकि अफसोस तो सभी को होता है, इसमें दो तरह के लोग आते हैं, जो जीते जी माँ बाप की सेवा ना कर पाये ना उन्हें टाइम दे पाये। ये नज़्म उन के लिये है।

'अलविदा'

जब रखोगे लकड़ियाँ मेरे बदन पे
आंसुओं के चंदन का लेप लगा देना
अग्नि देते समय इस नष्वर शरीर को
सिहरना मत, आंखों में मेरी छबि रख लेना
जाओगे जब अस्थि विसर्जन के लिये
राख के साथ मेरे प्रति कड़वाहट बहा देना
हो सकता है मेरी कुछ गल्तियाँ याद आयें
नादान समझ के उन्हें भुला देना
जानते हो पसंद है मुझे रजनीगंधा की महक
देह पर मेरे सफेद फूल बिखरा देना
हमारा यहीं तक का साथ था
दुहराते हुये मन में खुद को समझा लेना
बहाना जी भर के आंसू
बाद में ज़रा मुस्कुरा देना
भरे पेट वालों को मत खिलाना भोज
भूखों की भूख प्यासों की प्यास मिटा देना
टेबल पर रोज़ मेरे खाने की प्लेट लगाना
सब एकत्र हो प्रेम से मेरे जाने का
जश्न मनाना।
अब दूसरी तरह के लोग हैं जो अपने माँ बाप बुजुर्गों से बेइंतहा प्यार करते हैं
उन्हें लगता है कि हमें तो कभी पता ही नहीं चला उन्हें खाने में क्या पसंद हैं।
कौन से फूल, रंग, सब्जी, किताब उन्हें पसंद है। उनके लिये भी हमें आसानी करना चाहिये जाने से पहले लिख जाओ आप को क्या पसंद है उन्हें अहसास दिला

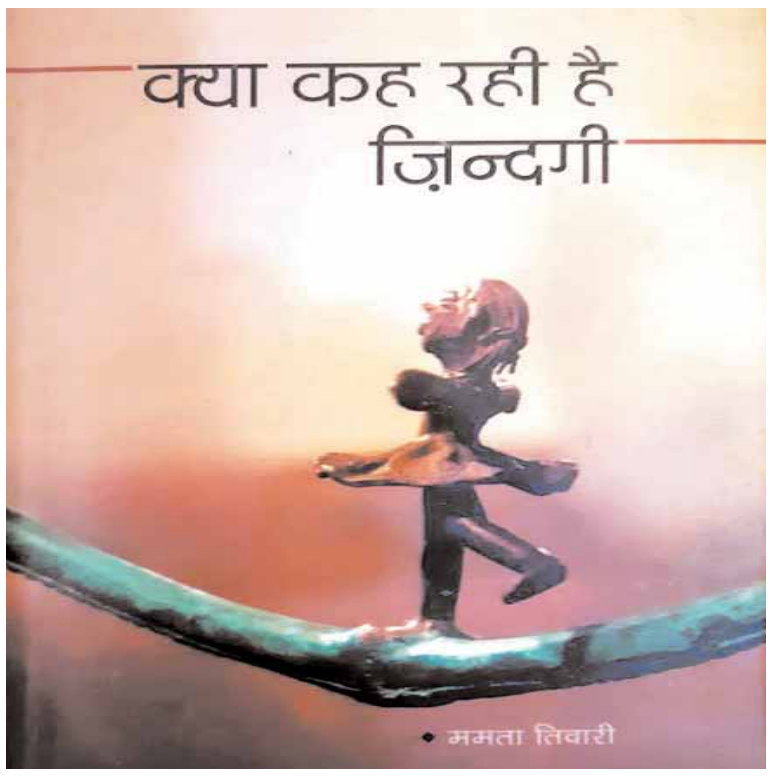

जाओ कि आप उन्हें कहीं छोड़ के कहीं नहीं गये।

'रूख़सत'

वापस आने के लिये
मुझे जाना तो होगा
उसकी बनाई इस रस्म को
निभाना तो होगा
कब कहाँ कैसे
जगह भी बताना होगा
मुझे समझने वाले मीत हो जहाँ
धीमा सुरीला संगीत हो जहाँ
गोया ये इंतेख़ाब है मेरा खुद
तो रिहाई का सरंजाम भी मेरा हो
ना हो आंसुओं की मौजूदगी वहाँ
ना उदासियों को बुलावा देना
जो आऊँ बहुत याद
ज़रा मुस्कुरा लेना
ना हो वस्त्र किसी के मलिन
ना हो ख़ामोषी मेरे बिन
हो चंद पुराने यार
कुछ करीबी रिश्तेदार
कुछ क़हकहे हो, मुस्कानें भी
रजनीगंधा हो, इत्र की भीनी खुशबू भी
वसीयत रहेगी, टूटी फूटी यादें
चंद मासूम किताबें
रखी हो जिसमें अक्षरों की चिल्लर
हो सके तो बांट लेना मिलकर
थोड़ी मुहब्बत, थोड़ी यारियाँ
दर्द को छोड़ सब दोगुना कर लेना
मेरे नाम से कोई ना रोना
रहूँगी आसपास धोखा ना करना
और ना ही करना मन उदास
बस्स, छोड़ रही है देह नश्वर
नहीं तुम्हारा घर
जब कोई फूल टपके तुम्हारी क्यारी
आंगन गूंजे कोई मासूम किलकारी
आंखों से गिरते अश्क़ में
बागों में दिखते इश्क़ में
रसोई से आती बर्तनों की आवाज़ों में
झूम के बजते सुरीले साज़ों में
समझ लेना तुम
मौजूद हूँ मैं वहाँ
उस क्यारी में
फुलवारी में
किलकारी में
अश्क में
इश्क में
आवाज़ों में
वही हूँ मैं,
वहीं तुम्हारे 'घर' में
.... आती हूँ अभी।

फिर भी कहती हूँ बाद की बात बाद में करना। अभी तो जीते जी पूछते रहना, और क्या कह रही है ज़िंदगी?

जिंदगी के रंग

रूक जाना नहीं हार कर...

बीते दिनों मैं जलगांव यात्रा पर था। जलगांव में कालका माता मंदिर भुसावल की ओर से हाईवे पर एक प्रवेशद्वार है। बस से आने वाली सवारी यहां से उतरना शुरू हो जाती है। मंदिर के दाहिने ओर का रोड शहर की तरफ जाता है तथा बाई ओर का रोड जूनी जलगांव में जाता है। दोनों रोड के संगम के बीच मंदिर बना है। सवारियां यहीं से बैठती उतरती हैं। मंदिर के इर्द-गिर्द अस्थाई दुकानें हैं जो सुबह लगती है और शाम को समेट ली जाती हैं।

मैंने देखा कि सामने रोड पर मोटरसाइकिल पर एक अधेड़ व्यक्ति झोला और वॉकर लिए उतरे। मैंने सोचा शायद किसी बस में जाएंगे। मोटर साइकिल चला कर आया युवा उन्हें उतार कर पास की दुकान में रखी टूटी-फूटी टेबल तथा कुर्सी ले आया। वे अधेड़ दिव्यांग थे। उन्होंने टेबल पर छोटी-मोटी चीजों को जमाना शुरू किया। देखते ही देखते 15 मिनिट में वह टेबल एक दुकान में बदल गई। उन्हें छोड़ने आया युवा दुकान शुरू करवा कर चला गया।

मैं उन्हें देखता रहा। थोड़ी देर बाद मैंपे उनके कुछ फोटो लिए और उनसे बातचीत करने चला गया। पता चला कि प्रतिदिन सुबह हमेशा इसी समय पुत्र उन्हें छोड़कर चला जाता है। उनका एक पैर दुर्घटना में चला गया था। उन्होंने हार नहीं मानी। अपना काम जारी रखा। वे हर मौसम में दुकान लगाते हैं। टेबल के नीचे टिफिन रखा था। भोजन भी वहीं कर लेते हैं। मुझे उनसे बातचीत करके बहुत अच्छा लगा। लेकिन जैसे ही मैंने कहा कि मैं आप पर लिखना चाहता हूं उन्होंने अपना नाम बताने से इंकार कर दिया। फुटपाथ पर दुकान लगाने वाले हर शख्श को अविश्वास रहता है कि न जाने कब खदेड़ दिए जाएं। स्थायी दुकान वह भी मुख्य मार्ग पर लेने की हैसियत नहीं है। यदि किराये से भी ली जाए तो कमाई का अधिकतर हिस्सा किराये में चला जाता है। तीन बाय तीन फीट के सीमित संसाधन में दि?यांग?यता के साथ आत्मसम्मान से जीवन यापन करना गर्व की बात है। बहुत खुशी हुई इस सुबह से। पास मे कालिका माता का मंदिर होते हुए भी मुझे तो भगवान के दर्शन उन श्रमवीर दिव्यांग में हुए।

फोटो व विवरण
बंशीलाल परमार

एआई तकनीक

डॉ. प्रदीप लक्षकार
डीन, आईटीएम एसएलएस बरोडा यूनिवर्सिटी, वडोदरा

पहले खुद हल खोजें, फिर एआई से मांगे सहायता

मानव मस्तिष्क को प्रकृति का सबसे अद्भुत चमत्कार माना जाता है। इसमें अरबों नयूरॉन्स होते हैं, जो आपस में जुड़कर नेटवर्क बनाते हैं। जब भी हम कुछ नया सीखते हैं, कोई किताब पढ़ते हैं, कोई अनुभव करते हैं या किसी समस्या को हल करते हैं, तो नयूरॉन्स के बीच नए संबंध बनते हैं। जितना अधिक अभ्यास करते हैं, ये संबंध उतने ही मजबूत होते जाते हैं। यही प्रक्रिया हमें बेहतर समझ, गहरी जानकारी और रचनात्मक सोच प्रदान करती है। कहा जा सकता है कि इंसान की पूरी बुद्धिमत्ता उसके नयूरॉन्स के नेटवर्क पर आधारित होती है। वैज्ञानिकों ने इसी सिद्धांत से प्रेरणा लेकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता का निर्माण किया।

मानव सभ्यता की प्रगति का सबसे बड़ा आधार उसकी बुद्धि रही है। सोचने-समझने की शक्ति और जटिल समस्याओं का समाधान खोजने की क्षमता ही इंसान को अन्य प्रजातियों से अलग बनाती है। यही कारण है कि इंसान ने समय-समय पर ऐसे उपकरण और तकनीक विकसित किए, जिनसे जीवन आसान होता गया। पहिये की खोज से लेकर बिजली, टेलीफोन और कंप्यूटर तक, हर आविष्कार ने इंसान की क्षमताओं को नई दिशा दी। आज इसी श्रृंखला का सबसे चर्चित अध्याय है – कृत्रिम बुद्धिमत्ता या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई)। यह तकनीक हमारे जीवन का ऐसा हिस्सा बन गई है कि अब इसके बिना आधुनिक जीवन की कल्पना करना कठिन हो गया है।

मानव मस्तिष्क को प्रकृति का सबसे अद्भुत चमत्कार माना जाता है। इसमें अरबों नयूरॉन्स होते हैं, जो आपस में जुड़कर नेटवर्क बनाते हैं। जब भी हम कुछ नया सीखते हैं, कोई किताब पढ़ते हैं, कोई अनुभव करते हैं या किसी समस्या को हल करते हैं, तो नयूरॉन्स के बीच नए संबंध बनते हैं। जितना अधिक अभ्यास करते हैं, ये संबंध उतने ही मजबूत होते जाते हैं। यही प्रक्रिया हमें बेहतर समझ, गहरी जानकारी और रचनात्मक सोच प्रदान करती है। कहा जा सकता है कि इंसान की पूरी बुद्धिमत्ता उसके नयूरॉन्स के नेटवर्क पर आधारित होती है। वैज्ञानिकों ने इसी सिद्धांत से प्रेरणा लेकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता का निर्माण किया।

आर्टिफिशियल न्यूरल नेटवर्क का विचार मानव मस्तिष्क से ही आया। जिस तरह नयूरॉन्स मिलकर सीखते हैं और अनुभवों से मजबूत होते हैं, वैसे ही कृत्रिम नयूरॉन्स आपस में जुड़कर पैटर्न को पहचानना और निष्कर्ष निकालना सीखते हैं। फर्क केवल इतना है कि इंसान को वर्षों तक मेहनत करनी पड़ती है, जबकि एआई कुछ ही हफ्तों या महीनों में लाखों डेटा से सीखकर परिणाम देने लगता है। यही कारण है कि आज भाषा अनुवाद से लेकर रोग निदान तक, एआई कई क्षेत्रों में इंसान से तेज़ और सटीक साबित हो रहा है। यह तकनीक हमारे जीवन को सुविधाजनक बना रही है। आज हम मोबाइल पर वॉइस असिस्टेंट से बातचीत करते हैं, चैटबॉट से सलाह लेते हैं, या फिर कुछ ही सेकंड में इंटरनेट पर जटिल सवालों का जवाब पा लेते हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग, कृषि और मनोरंजन–हर क्षेत्र में एआई ने अपना दखल बना लिया है। वह काम, जो पहले घंटों या दिनों में होता था, अब मिनटों और सेकंडों में संभव हो रहा है। यह कहना गलत नहीं होगा कि एआई ने हमें एक ऐसा सहायक दिमाग दे दिया है, जिसके लिए पहले इंसान को वर्षों तक मेहनत करनी पड़ती थी। लेकिन इसी सुविधा के साथ एक बड़ा खतरा भी छिपा है।

इंसान धीरे-धीरे अपनी प्राकृतिक क्षमताओं का उपयोग कम करता जा रहा है। जब हर सवाल का जवाब तुरंत एआई से मिल सकता है, तो लोग खुद सोचने और दिमाग पर जोर डालने से बचने लगते हैं। समस्या-समाधान और विश्लेषण की आदत कमजोर पड़ने लगती है। यदि यही प्रवृत्ति जारी रही, तो एक दिन ऐसा आएगा जब इंसान अपने नयूरॉन्स के नए संबंध बनाना ही बंद कर देगा। नतीजा यह होगा कि उसकी स्वतंत्र सोचने की क्षमता धीरे-धीरे कम हो जाएगी और वह हर छोटे-बड़े निर्णय के लिए मशीन पर निर्भर हो जाएगा।कल्पना कीजिए कि जब जीवन के अहम फैसले भी इंसान खुद न लेकर मशीन के भरोसे छोड़ देगा, तो उसकी स्थिति क्या होगी? धीरे-धीरे इंसान तकनीक का मालिक न रहकर उसका गुलाम बन जाएगा। इतिहास गवाह है कि हर बड़ी खोज ने इंसान को शक्ति तो दी है, लेकिन उस पर पूरी तरह निर्भर होने से समाज कमजोर भी हुआ है।

आज यदि हम एआई पर आँख मूँदकर विश्वास करेंगे, तो आने वाले समय में हमारी बौद्धिक स्वतंत्रता खतरे में पड़ सकती है। इस स्थिति से बचने का रास्ता यही है कि हम संतुलन बनाएँ। एआई का उपयोग करें, लेकिन उसे केवल सहायक की भूमिका में रखें। हमें यह समझना होगा कि एआई हमारी सोचने की क्षमता को समाप्त करने के लिए नहीं, बल्कि उसे सहयोग देने के लिए बना है। इंसान को चाहिए कि वह हर दिन अपने दिमाग को सक्रिय रखने के प्रयास करे। किताबें पढ़े, नई चीजें सीखे, समस्याएँ हल करे और रचनात्मक गतिविधियों में हिस्सा ले। सीखने और समझने की प्रक्रिया को सक्रिय रखना जरूरी है, ताकि हमारे नयूरॉन्स नए संबंध बनाते रहें और मस्तिष्क मजबूत होता रहे।

संतुलन बनाए रखने का एक तरीका यह भी है कि किसी समस्या का हल पहले खुद निकालने की कोशिश करें और उसके बाद एआई से उसकी तुलना करें। इससे आलोचनात्मक सोच भी विकसित होगी और आत्मविश्वास भी बढ़ेगा। इसी तरह नई भाषाएँ सीखना, लेखन करना, संगीत, खेल और गणित जैसी गतिविधियों में भाग लेना मस्तिष्क को प्रशिक्षित करता है। मानसिक व्यायाम के साथ शारीरिक व्यायाम और ध्यान जैसी आदतें भी दिमाग को सक्रिय रखने में सहायक होती हैंयह भी याद रखना चाहिए कि एआई उतना ही अच्छा है, जितना डेटा हम उसे देते हैं। इसलिए उसकी दी हुई जानकारी को आँख मूँदकर स्वीकार करना समझदारी नहीं है। यदि हम हर उत्तर को आलोचनात्मक दृष्टि से देखेंगे और उसका मूल्यांकन करेंगे, तो हम खुद को निष्क्रिय नहीं बल्कि और अधिक सक्रिय बना पाएँगे। तकनीक का विकास तभी सार्थक है जब वह इंसान की बौद्धिक और मानवीय क्षमता को और मजबूत बनाए, न कि उसे कमजोर करे।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव सभ्यता की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है। यह आने वाले समय में शिक्षा, चिकित्सा और उद्योग को और अधिक विकसित करेगी। लेकिन यह तभी संभव है जब इंसान अपनी असली ताकत, यानी अपने मस्तिष्क की शक्ति को बनाए रखे। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि मशीनें हमारी खोज हैं, और उनका स्थान सहायक का होना चाहिए, मालिक का नहीं।निष्कर्ष यही है कि हमें एआई का विवेकपूर्ण उपयोग करना चाहिए। यह हमारे जीवन को बेहतर बनाने का साधन है, परंतु यदि हम उस पर पूरी तरह निर्भर हो गए तो हमारी स्वतंत्र सोचने की क्षमता खतरे में पड़ जाएगी। भविष्य का सही रास्ता वही होगा जिसमें इंसान और मशीन दोनों मिलकर काम करें, लेकिन इंसान का मस्तिष्क हमेशा केंद्र में रहे। तकनीक से सुविधा प्राप्त करें, परंतु अपने मस्तिष्क को रोज़ाना प्रशिक्षित करना न भूलें, क्योंकि वही हमारी असली सुरक्षा और प्रगति की गारंटी है।